सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

फरवरी, 2021 वर्ष 19 अंक 12

रब की करें सब बन्दगी

फरवरी में या ख़ुदा
कर रहा राही दुआ़
इस माह में राहत मिले
रब का करम रहमत मिले
अब कोरोना न बढ़े
कोई इसमें न पड़े
लॉक डाउन न लगे
कर्फ्यू भी न लगे
मामूल की हो ज़िन्दगी
रब की करें सब बन्दगी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
संयोगवश अथवा भाग्यवश	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
नारी की प्रतिष्ठा और उसके	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
इस्लामिक अर्थव्यवस्था	हज़रत मौलाना सै0 मुहम्मद राबे हसनी	14
नबी करीम सल्ल0	मौलाना मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	18
आपसी मतभेद और ख़ानदानी	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
बख़्शिश की दुआ़ (पद्य)	सम्पादक	27
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	28
अनोखे फूल और पत्ते	माइल ख़ैराबादी	32
इल्म का बहुमूल्य ख़ज़ाना	इदारा	36
शराब, भंग, हीरोइन	ई0 जावेद इकबाल	38
राष्ट्रीय गीत	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद :–

मूसा और हारून के पालनहार को[1](122) फिरऔन बोला कि तुमने मेरी अनुमति से पहले ही इसको मान लिया यह तो ज़रूर एक चाल है जो तुम शहर में इसलिए चल रहे हो ताकि यहां के वासियों को यहां से निकाल बाहर करो जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा(123) मैं तुम्हारे हाथों को और पैरों को उल्टी ओर से काट डालूँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा(124) उन्होंने कहा कि हमें तो अपने पालनहार के पास जाना है(125) और आप हमसे इसलिए बैर रखते हैं कि हमारे पालनहार कि निशानियाँ जब हमारे पास पहुंच गईं तो हमने उनको मान लिया, ऐ हमारे पालनहार! हम सब पर सब्र उड़ेल दे और हमें ईमान के साथ उठा[2](126) और फिरऔन की क़ौम के सम्मानित लोग बोले क्या आप मूसा और उनकी क़ौम को छोड़ देंगे कि वे देश में बिगाड़ मचाते फिरें और वह आपको और आपके खुदाओं को छोड़ दें, वह बोला हम अभी उनके बेटों को क़त्ल ही किये देते हैं और उनकी औरतों को छोड़ देंगे और हम तो उन पर पूरा ज़ोर रखते हैं[3](127) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, ज़मीन का मालिक अल्लाह ही है वह अपने बन्दों में जिसे चाहता है उसको वारिस बनाता है और नतीजा तो परहेज़गारों ही के पक्ष में है(128) वे बोले कि आपके आने से पहले भी हमें सताया गया और आपके आने के बाद भी, उन्होंने कहा आशा है अल्लाह तुम्हारे दुश्मन का विनाश करेगा और मुल्क में तुम्हें खलीफ़ा बनायेगा फिर वह देखेगा कि तुम कैसे काम करते हो[4](129) और अकाल से और फलों में कमी करके हमने फिरऔन के लोगों की पकड़ की शायद वे नसीहत हासिल करें(130) बस जब उन पर खुशहाली आती तो कहते कि ''यह तो है ही हमारे लिए'' और जब बदहाली का सामना होता तो उसको मूसा और उनके साथियों की नहूसत (अपशकुन) बताते, सुन लो उनकी नहूसत तो अल्लाह के यहां नियत है लेकिन उनमें अधिकांश बेख़बर है(131) और वे बोले कि तुम हर जादू चलाने के लिए कैसी ही निशानी ले आओ तो तब भी हम तुम को मानने वाले नहीं[5](132) फिर हम ने उन पर तूफान और टिड्डी और जूँ और मेढ़क और ख़ून कई निशानियाँ अलग अलग भेजीं फिर भी वे अकड़ते रहे और वे कहते ऐ मूसा! जैसा तुम्हें तुम्हारे पालनहार ने बता रखा है तुम हमारे लिए दुआ कर दो अगर हम से यह अज़ाब तुम ने दूर कर दिया तो हम ज़रूर

तुम्हें मान लेंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ जाने देंगे[6](134) फिर जब हम उनसे अज़ाब एक निर्धारित अवधि तक के लिए उठा लेते जहां (जिस अवधि तक) उनको पहुंचना ही था तो वे वचन भंग करने लगते[7](135) फिर हमने उनसे बदला लिया तो उनको समुद्र में डुबो दिया इसलिए कि वे हमारी निशानियाँ झुठलाते थे और वे उनसे अचेत थे(136) और जिन लोगों को कमज़ोर समझा जाता था हमने उनको उस देश में पूरब–पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी और तुम्हारे पालनहार के नेकी का वादा बनी इस्राईल पर उनके सब्र की वजह से पूरा हुआ और फिरऔन और उनके लोग जो बनाते थे और जो चढ़ाते थे उनको हमने मलयामेट कर डाला[8](137)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. मूसा और हारून के पालनहार (रब) कहने की ज़रूरत इसलिए पड़ी की भ्रम न उत्पन्न हो क्योंकि फिरऔन भी अपने आपको रब (पालनहार) कहा करता था।

2. जादूगरों को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी का हाल मालूम हो चुका था और वे उसको जादू समझ कर अपनी ओर से लाठियाँ और रस्सियाँ जादू कर के लाये थे, हज़रत मूसा के कहने पर पहले उन्होंने ही कार्यवाही शुरु की, पहले ही चरण में हर ओर साँप दौड़ते दिखाई पड़ने लगे जैसे मूसा अलैहिस्सलाम ने लाठी (असा) ज़मीन पर डाली वह तुरन्त सबको डकार गयी, जादूगरों को विश्वास हो गया कि यह जादू से ऊपर की कोई वास्तविकता है वे बे सुध हो कर सजदे में गिर गए और फिरऔन और उसकी क़ौम अपमानित हो कर पलटी, जादूगरों को उसने धमकी दी लेकिन वे कुछ ही छणों में ईमान व विश्वास के उतकृष्ट स्थान पर पहुंच चुके थे उन्होंने साफ़ कह दिया कि जो चाहे तू करे हमें तो अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।

3. जादूगरों के ईमान से बनी इस्राईल तो सभी हज़रत मूसा के साथ हो गए, बहुत से क़िब्ती साथ देने लगे तो फिरऔन के लोगों ने उसको भड़काया कि यह तो धीरे धीरे छा जाएंगे और आपको आपकी मूर्तियों और प्रतिमाओं को छोड़ देंगे, फिरऔन अपने को ''रब्बे आला'' (सबसे बड़ा पालनहार) कहता था और अपनी प्रतिमाएं और गायें आदि की मूर्तियाँ बाँट दी थी ताकि लोग उनको पूजें।

4. हज़रत मूसा अ़लै0 की पैदाईश के समय भी फिरऔन लड़कों को मार डालता और लड़कियों को सेवा के लिए ज़िन्दा रखता वही स्कीम उसने फिर शुरु की, बनी इस्राईल घबरा गए तो हज़रत मूसा ने उनको तसल्ली दी, यह आयतें उस समय उतरीं जब मुसलमानों को पवित्र मक्का में सताया जा रहा था।

5. अल्लाह ने पहले उनको विभिन्न मुसीबतों से आज़माया कि शायद वे सीधे रास्ते (हिदायत) पर आ जाएं लेकिन उनकी ढ़िटाई बढ़ती गईं यहाँ तक कि जब कोई मुसीबत आती तो कहते कि यह मूसा की नहूसत (अपशकुन) है, अल्लाह कहता है कि यह खुद उनकी नहूसत है, जो अल्लाह के पास है, उसका कुछ असर

शेष पृष्ठ .....17....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

क़यामत से पहलेः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो ''सूर'' के दरमियान चालीस हैं, लोगों ने पूछा ऐ अबू हुरैरा यह मुद्दत चालीस दिन की है। अबू हुरैरा रज़ि0 ने कहा मैं नहीं जानता, फिर कहा चालीस महीने, उन्होंने कहा क्या ख़बर? फिर लोगों ने कहा चालीस वर्ष, कहा मुझे यह भी नहीं मालूम, फिर अल्लाह तआला पानी बरसायेगा तो आदमी उगेंगे और पैदा होंगे जैसे हरियाली उगती है और इन्सान का पूरा शरीर बहुत कमज़ोर हो जाता है सिर्फ रीढ़ की हड्डी बाक़ी रहती है उसी से इन्सान दोबारा पैदा किया जायेगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

क़यामत के क़रीब आने की निशानियाँः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मज्लिस में लोगों से बातें कर रहे थे, इतने में एक देहाती आया और पूछने लगा कि हुजूर सल्ल0 क़यामत कब आयेगी, आप सल्ल0 लगातार बातें करते रहे, कुछ लोगों ने यह ख़्याल किया कि हुजूर सल्ल0 को उस की बात शायद नागवार गुज़री, और कुछ का ख़्याल हुआ कि शायद हज़रत ने सुना न हो, जब आप सल्ल0 बात ख़त्म कर चुके तो इरशाद फरमाया क़यामत का पूछने वाला कहाँ है, उस ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैं हाजिर हूं, आपने फ़रमाया जब अमानत बर्बाद की जाये उस वक़्त क़यामत का इंतज़ार करो, उसने पूछा हुजूर अमानत बर्बाद करने का क्या मतलब? फरमाया जब काम ना अहलों के सुपुर्द किये जायें (यानी हुकूमत के काम)। (बुखारी)

इमामों का हुक्मः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इमाम तुम को नमाज़ पढ़ायेंगे, अगर अच्छी तरह पढ़ाई तो तुम्हारे लिए भी फायदा है और उनके लिए भी, और अगर ग़लत पढ़ाई तो तुम्हें तो सवाब मिलेगा और उन पर वबाल होगा।

(बुख़ारी)

मस्जिद और बाज़ार का फर्क़ः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शहरों की जगहों में अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़ियादा पसंदीदा मस्जिदें हैं और सबसे ज़ियादा ना पसंदीदा बाज़ार हैं। (मुस्लिम)

हज़रत सलमान फारसी रज़ि0 का कथन है कि अगर तुम से हो सके तो बाज़ार में सबसे पहले दाखिल होने वाले और सबसे आखिर में निकलने वाले न बनो, इसलिए कि वह शैतान का अड्डा है

उसमें उसका झण्डा गड़ा है।

(मुस्लिम)

बरक़ानी की एक सही रिवायत में हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया सबसे पहले बाज़ार जाने वाले और सबसे आखिर में निकलने वाले न बनो इस में शैतान अण्डे बच्चे देता है।

मोमिनीन के लिए रसूल सल्ल0 का इस्तिगफ़ारः–

हज़रत आ़सिम अह़वल से रिवायत है कि वह अब्दुल्लाह बिन सरजिस से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह तआ़ला आपको बख्शे, आप सल्ल0 ने फरमाया तुम को भी बख्शे, आ़सिम कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन सरजिस से कहा तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बख्शिश चाही, उन्होंने कहा हाँ और तुम्हारे लिए भी, फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी, अनुवाद– आप मोमिन मर्द और मोमिन औरतों के लिए बख्शिश माँगिये।

(मुस्लिम)

कलामे नबूव्वतः–

हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जो बात अगले कलामे नबुव्वत से लोगों ने पाई है वह यह है कि तुम को शर्म न आये तो जो जी चाहे करो।

(बुख़ारी)

क़यामत में पहला मुक़दमाः–

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़यामत के दिन सब से पहले खून का फैसला होगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

विभिन्न जीवों की पैदाइशः–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया फरिश्ते नूर से पैदा किये गये और जिन्न आग की लौ से, और हज़रत आदम अलै0 उस चीज़ से पैदा किये गये जिसका तुम से बयान हो चुका है।

(मुस्लिम)

नबी सल्ल0 के अख़लाक़ः–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 का अख़लाक़ कुर्आन करीम के मुताबिक़ था। (मुस्लिम)

अल्लाह से मिलने का शौक़ः–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जो अल्लाह की मुलाक़ात को पसन्द करता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलने का ख्वाहिशमंद होता है और जो उसकी मुलाक़ात नहीं चाहता तो अल्लाह भी उससे मिलना नहीं चाहता, मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मौत को तो कोई भी पसन्द नहीं करता, मुझे भी तो मौत ना पसंद है, आप सल्ल0 ने फरमाया यह बात नहीं, अस्ल यह है कि जब मोमिन बन्दे को अल्लाह की रहमत उसकी रिज़ा और जन्नत की बशारत दी जाती है तो वह अल्लाह की मुलाक़ात का ख्वाहिशमंद हो जाता है, और अल्लाह भी उससे मिलना चाहता है और काफिर को जब अल्लाह के अज़ाब और उसकी नाराज़गी की ख़बर सुनाई जाती है तो वह अल्लाह से भागता है और अल्लाह भी उससे मिलना नहीं चाहता। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

संयोगवश अथवा भाग्यवश

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

प्रिय पाठको, नव वर्ष की शुभ कामनायें! विद्यमान परिस्थिति को देखते हुए नव वर्ष पर कुछ न लिख कर संयोगवश अथवा भाग्यवश पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास करूँगा।

सच्ची बात यह है कि संयोगवश से कुछ नहीं होता जो कुछ होता है भाग्यवश से होता है, इस विषय पर कुछ घटनाएं लिखता हूँ।

बहुत दिन हुए हैदराबाद की एक घटना समाचार पत्र में पढ़ी थी, एक धनवान सज्जन को रेल से कहीं जाना था, वह अपनी कार से स्टेशन को रवाना हुए, स्टेशन पहुँचे तो गाड़ी छूट चुकी थी, ड्राइवर से कहा हमारी कार की रफ़्तार ट्रेन से ज़ियादा है, कार बढ़ाओ अगले स्टेशन पर गाड़ी को पकड़ लेंगे, ड्राइवर ने निवेदन किया कि हुज़ूर, परेशान न हों कल चले जाइएगा, लेकिन उन्होंने कहा, नहीं कार बढ़ाओ अगले स्टेशन पर गाड़ी पकड़ेंगे, ड्राइवर ने कार बढ़ा दी और अगले स्टेशन पर ट्रेन मिल गयी, वह सज्जन पुरुष ट्रेन पर सवार हुए, ड्राइवर कार ले कर घर वापस आया, ट्रेन रवाना हुई, आगे एक नदी पड़ती थी, शायद मूसा नाम की नदी थी, नदी पर पुल बना था, ट्रेन पुल पर पहुंची तो पुल का कुछ भाग टूट गया, ट्रेन के कुछ डिब्बे नदी में गिर गये, वह सज्जन उसी डिब्बे में थे और नदी में डूब कर मर गये, ऐसा संयोगवश से नहीं भाग्यवश से हुआ।

अगर वह सज्जन अपने ड्राइवर का कहना मान लेते तो उनकी जान बच जाती, मगर कैसे मानते, उनके भाग्य में तो उसी दिन मौत लिखी थी।

जब ज़मीनदारी खत्म हुई तो ज़मींदारों के बाग़ उनके क़ब्ज़े में रहे, तो उन्होंने अपने बाग़ात बेच दिये, जो लोग बाग खरीद कर कटवाते थे उनको ठेकेदार कहा जाता था, एक ठेकेदार बाग़ कटवा रहे थे, शीशम के झुकाव से अंदाजा था कि यह दक्खिन की तरफ़ गिरेगा, लेकिन दक्खिन की तरफ़ आम रास्ता था, ठेकेदार ने दोनों ओर रोक खड़ी कर दी और लिख दिया कि कृप्या घूम कर निकल जायें, लोग घूम कर निकल जाते थे, जब शीशम की जड़ें कट गयीं और शीशम गिरने वाला था, एक सज्जन ने रास्ते की रोक की परवाह न की, रोक को फाँद कर उसी रास्ते पर चल पड़े, उधर शीशम गिरने लगा, मज़दूर चिल्लाये भाग, भाग, भाग! मगर वह सज्जन भागे नहीं अपितु शीशम को देखने लगे, इतने में शीशम उनके ऊपर आ गिरा और वह उसी वक़्त मर गये।

कैसे भागते? उनके

भाग्य में तो उसी वक़्त मौत लिखी थी।

एक 6 साल का बच्चा रेलवे लाइन की पटरी पर खेलने लगा, अगरचि पटरी पर आने के लिए रोक लगी थी, मगर वह किसी तरह पटरी पर पहुँच गया, उसके घर वालों ने पटरी पर जाते नहीं देखा, और जब देखा तो बहुत घबराए, इसलिए कि ट्रेन आती दिखी, बच्चे ने भी ट्रेन को आते देखा, वह मारे डर के पटरी के बीच में लेट गया, ट्रेन उसके ऊपर से गुज़र गयी, और उसकी जान बच गयी, घर वालों ने दौड़ कर बच्चे को उठाया, बच्चे के भाग्य में अभी जीवन लिखा था, इसलिए अल्लाह ने उसको बचा लिया।

मैं मजिस्द में नमाज़ पढ़ने जाता था, कच्ची मस्जिद थी, ज़रा ऊँचाई पर थी, तीन कच्चे ज़ीनों पर चढ़ना पड़ता था, इशा के वक़्त रात के अंधेरे में भी मैं किसी रोशनी के बग़ैर मस्जिद जाता और नमाज़ पढ़ आता।

एक रात वालिदा ने कहा अंधेरे में जाते हो लालटेन ले लो, मैंने लालटेन ले ली, मस्जिद के दरवाज़े पर पहुँचा तो देखा ज़ीने पर काला साँप बैठा है, मैंने चचाज़ाद भाई को आवाज़ दी, वह लाठी ले कर आये और साँप को मारा, मेरे भाग्य में साँप से बचना था इसलिए उस दिन लालटेन ले कर गया।

यह जो लाखों लाख तथा कदाचित 90 लाख के आस पास लोग कोरोना से पीड़ित हुए हैं, यह संयोगवश से नहीं हुआ है, उनके भाग्य में लिखा था कि वह कोरोना से पीड़ित होंगे, यह जो सवा लाख के लगभग अपने भाई, कोरोना से मृत्यु हो गये हैं उनके भाग्य में लिखा था कि वह कोरोना से मृत्यु प्राप्त करेंगे, जो लोग स्वस्थ हुए हैं उनके भाग्य में लिखा था कि कोरोना से पीड़ित हो कर स्वस्थ होंगे, भाग्य का लिखा हो कर रहता है, परन्तु भाग्य के विषय में भ्रम में न पड़ना चाहिए।

कोई नहीं जानता कि उसके भाग्य में क्या है अतः वह कामना करता है कि अगर हम प्रयास करेंगे तो हमारा भविष्य अच्छा होगा, यह मानव जाति का प्राकृतिक स्वभाव है, अतएव वैज्ञानिकों ने कोरोना से बचाव के कुछ नियम बनाये हैं जिनको रेडियो से बार बार अनाउन्स किया जाता है वह यह हैं, दो गज़ की दूरी, बार बार हाथों की धुलाई, मास्क का प्रयोग, बहुत अच्छे नियम हैं, दो गज़ की दूरी का अर्थ स्पष्ट नहीं है, यदि तात्पर्य यह है कि दो गज़ आगे दो गज़ पीछे दो गज़ दायें दो गज़ बायें यह है तो बहुत अच्छा नियम है परन्तु हर स्थान पर इस पर अमल संभव नहीं है, बसों में, ट्रेनों में, हवाई जहाज़ में आगे पीछे दायें बायें दो गज़ की दूरी पर अमल नहीं है ना ही बार बार हाथ धोने की सुविधा है अतः यह अनाउंस होना चाहिए, सम्भावनानुसार

शेष पृष्ठ .....13....पर

–पिछले अंक से आगे

नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नवजागरण और महान क्रान्तिः–

कुरआन और नबी की शिक्षाओं की रोशनी में नारी की प्रतिष्ठा के बारे में यह नया दृष्टिकोण एक प्रकार से मानव जगत में नारी के नवजागरण की हैसियत रखता है। क्योंकि जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं प्राचीन काल में उसमें और पालतू जानवर में अथवा किसी बेजान चीज़ में कोई अन्तर न था। वह ज़िन्दा दफन कर दी जाती थी, रहन रखी जाती या किसी महल की गुड़िया समझी जाती थी। ऐसी दशा में यह क्रान्तिकारी शिक्षायें सभ्यता व आचरण, घरेलू व वैवाहिक जीवन में एक शुभ संयोग के रूप में सामने आयीं जिनका थोड़ा बहुत सभी देशों ने और समाज ने स्वागत किया विशेषकर उन देशों ने जहां इस्लाम ने विजयी बन कर प्रवेश किया अथवा जहां उसे शासन व व्यवस्था करने का अवसर मिला या जहां वह एक सुधारात्मक आह्वान और व्यावहारिक नमूना के रूप में पहुंचा। इस्लाम की देन की छाप उन देशों में स्पष्ट दिखाई पड़ती है जहाँ विधवायें अपने को अपने मृत पतियों की चिता में जला डालती थीं। और न तो समाज उनको पतियों के बाद जीवित रहने का अधिकार देता था और न वह स्वयं अपने को उसका हक़दार समझती थीं।

मुसलमान बादशाहों ने अपने समय में कुछ हिन्दुस्तानी कुप्रथाओं का विशेषकर 'सती' की प्रथा का इस प्रकार सुधार किया कि धार्मिक विश्वास तथा भारतीय परम्परा को न नुकसान पहुंचे और न उनका अनादर हो। इस सम्बन्ध मे विख्यात फ्राँसीसी यात्री डॉ0 बर्नियर जिसने शाहजहाँ के शासन काल में भारत का भ्रमण किया था, अपने 'सफ़रनामा' जो अमृतसर से 1886 में प्रकाशित हुआ के खण्ड दो के पृष्ठ 172–174 में लिखता हैः–

''आजकल पहले की अपेक्षा 'सती' की संख्या कम हो गई है। क्योंकि मुसलमान जो इस देश के शासक हैं, इस जंगली प्रथा का समूल नष्ट करने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। और यद्यपि इसे लागू करने के लिए कोई क़ानून नहीं है, क्योंकि इन की नीति का यह एक अंश है कि हिन्दुओं की विशिष्टताओं में जिनकी संख्या मुसलमानों से कहीं अधिक है, हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते। बल्कि उन्हें धार्मिक संस्कारों को करने में आज़ादी देते हैं। फिर भी सती प्रथा को कुछ न कुछ तरीकों से रोकते रहते हैं। यहाँ तक कि

कोई औरत अपने प्रान्त के शासक की अनुमति के बिना सती नहीं हो सकती। और सूबेदार कदापि अनुमति नहीं देता जब तक कि निश्चित रूप से उसे विश्वास नहीं हो जाता कि वह अपने इरादे से हरगिज़ बाज़ नहीं आयेगी। सूबेदार विधवा को समझाता है और बहुत से वादे करता है और उसे डराता है। और यदि उसके उपाय कारगर नहीं होते तो कभी ऐसा भी करता है कि अपनी महलसरा में बेगमात के पास भेज देता है ताकि वह भी उसको अपने तौर पर समझायें।

किन्तु इन सब बातों के बावजूद 'सती' की संख्या अब भी बहुत है। विशेषकर उन राजाओं के इलाक़ों में जहां कोई मुसलमान सूबेदार नियुक्त नहीं है।''

आधुनिक योरोप व अमरीका में:-

जहाँ तक आधुनिक योरोप व अमरीका का सम्बन्ध है जहां आजकल औरत की आज़ादी का नारा बड़े जोश के साथ लगाया जाता है और जहां के बारे में विश्वास किया जाता है कि वहां औरत सबसे ज़ियादा इज्जत और आज़ादी व खुदमुख़्तारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही है और उसे इसी दुन्या में जन्नत नसीब है, वहां की वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में वह ताज़ा जानकारी काफी हैं जो वहां के समाचार पत्रों, ज़िम्मेदार संस्थाओं तथा व्यक्तियों के बयान से उद्धृत हैं।

पश्चिम व पूरब के विकसित देशों को उग्रवाद के एक नये रूप का सामना है जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ के सामाजिक विकास तथा मानव संसाधन के केन्द्र ने ''घरेलू उग्रवाद'' का नाम दिया है। वियाना स्थित इस केन्द्र ने विभिन्न देशों के सर्वेक्षण के परिणामों पर आधारित दो पत्रक प्रकाशित किये हैं जिनमें तलाक़ (विवाह–विच्छेद) की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई घटनाओं पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई है। और घरेलू उग्रवाद को वर्तमान युग की एक अत्यन्त मार्मिक, चिन्ताजनक वास्तविकता बताया गया है, जिसकी ओर तत्काल ध्यान देने की ज़रूरत है। और जिसकी अनदेखी करना अब सम्भव नहीं रह गया है। इन पत्रकों में इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई है कि व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ व मज़बूत बुन्याद प्रदान करने वाले परम्परागत मूल्यों का तेजी के साथ ह्रास होता जा रहा है। परिवार जो कभी बूढ़े व अपंग व्यक्तियों की देख–भाल व सुरक्षा तथा बच्चों के पालन पोषण की ऐसी जमानत देते थे जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता था, अब बुरी तरह टूट–फूट के शिकार हैं। कोई किसी की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। गत वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में आयोजित एक

अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भी यह बात नोट की गई थी कि औद्योगिक देशों में पत्नी को मारने–पीटने की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई घटनाओं, बलात्कार और बच्चों के पालन पोषण तथा उनकी देख–रेख से लापरवाही के फलस्वरूप पारिवारिक जीवन के ताने–बाने बिखरते जा रहे हैं।

कनाडा के न्याय मंत्रालय ने पिछले अक्तूबर में ''समाज में उग्रवाद'' विषय पर एक सेमीनार (विचार गोष्ठी) आयोजित किया था जिसने यह निष्कर्ष निकाला था कि ''घरेलू उग्रवाद'' ने एक संगीन अपराध का रूप धारण कर लिया है। संचार के साधन भी अब जिसका नोटिस लेने पर मजबूर हैं। कनाडा के पब्लिक प्राजीक्यूटर मिस्टर किंग के मतानुसार घरेलू उग्रवाद में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी की ज़िम्मेदारी शराब और नशीले पदार्थों के प्रति बढ़ती हुई रुचि व दिलचस्पी पर आयद होती है। उनका कहना है कि बैंक डकैतियों की तरह घरों की शान्ति व चैन पर डाका डालने वाले इस तत्व का पुलिस को नोटिस लेना चाहिए। और 'घरेलू उग्रवाद' को पुलिस को हस्तक्षेप अपराध (Cognizable Offence) घोषित कर देना चाहिए। सेमीनार ने मिस्टर किंग की इस राय से सहमति व्यक्त की।

अमरीका का हाल तो और भी बुरा है। वहाँ एक सर्वेक्षण के अनुसार सोलह प्रतिशत जोड़े घरेलू उग्रवाद के शिकार हैं। जहाँ डेविड कोर्निन तथा कैथेलीन टर्फी के अनुसार प्रतिवर्ष तीन लाख छिहत्तर हज़ार बच्चों को काम वासना का शिकार बनाया जाता है। जहाँ 'घरेलू उग्रवाद' का प्रदर्शन पत्नी को मारने–पीटने, हाथ पैर बान्ध कर उल्टा लटका देने, गला घोटने और बलात्कार के रूप में होता रहता है। सोवियत संघ का हाल भी कुछ अधिक भिन्न नहीं है जहाँ तलाक़ की घटनायें आये दिन होती रहती हैं। और जहाँ व्यक्तिगत जीवन की बुन्यादें हिल कर रह गई हैं।

❖❖❖

संयोगवश या भाग्यवश.....

उचित दूरी, सुविधा पर हाथों की सफाई और मास्क का प्रयोग, यदि इन नियमों पर अमल करते रहे तो खुदा ने चाहा तो कोरोना से बचे रहेंगे, परन्तु आवश्यक है कि हम भाग्य बनाने वाले से विनती करें कि हे ईश्वर! हे अल्लाह! हम सभी देशवासियों को, मानव जाति को कोरोना से छुटकारा दे।

हम दुआ करते हैं और आशा करते हैं कि सन् 2021 में अल्लाह तआला कोरोना से तथा और विपत्तियों से सुरक्षित रखेगा।

❖❖❖

इस्लामिक अर्थ व्यवस्था को लागू करने की ज़रूरत

—हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इस्लाम की सोच और वर्तमान पश्चिमी सोच में अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट अन्तर है, अगर्चे इस्लाम में भी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए जितनी चिन्ता की ज़रूरत है उसको पूरा करने पर बल दिया गया है, और उस की दो मिसालें बहुत मशहूर हैं एक तो यह कि हुज़ूर सल्ल0 ने ज़रूरतमंद को उसके घर के प्याले को मंगवा कर नीलाम कर के एक दिरहम उसको अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए दे दिया और दूसरे दिरहम मे कुल्हाड़ी ख़रीद के अपने हाथ मुबारक से दस्ता लगाया और कहा कि लकड़ी काटो और बेचो और उससे काम चलाओ। दूसरी मिसाल— हज के मौक़े पर एक सहाबी ने प्रस्ताव रखा कि वे अपनी सारी सम्पत्ति अल्लाह की राह में दे दें, आप सल्ल0 ने मना फरमाया, उन्होंने कहा आधा दे दें, आप सल्ल0 ने उससे भी मना कर दिया, उन्होंने कहा कि तिहाई दे दें, आपने फरमाया कि तिहाई भी बहुत है, लेकिन कर सकते हो, और देखो अपने बच्चों को बे सहारा छोड़ने के बजाए उनके लिए इंतेज़ाम करके जाओ।

इन दो मिसालों से आप सल्ल0 ने हम को यह नियम दिया कि ज़रूरत के लिए माल व दौलत की चिन्ता ज़रूरी है, लेकिन पश्चिमी नियम ये है कि जितना ज़ियादा से ज़ियादा मिल सके चाहे दूसरे का पेट काट कर मिले, इसकी कोशिश की जाए, इन्सान का पेट एक हद रखता है, और दूसरे इन्सान भी इन्सान हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया कि इन्सान को अगर एक मैदान सोना भर कर मिल जाये तो वो चाहेगा कि दूसरा मैदान भी भर के मिल जाये, और दूसरा भी मिल जाये तो तीसरे की इच्छा करेगा, और फरमाया कि इन्सान का पेट मिट्टी ही भरेगी, और पश्चिमी अर्थव्यवस्था इसी इन्सान की मिसाल है, इसके नतीजे में कुछ लोग बेइन्तेहा मालदार हो जाते हैं और कुछ लोग दो वक़्त के खाने के भी मोहताज हो जाते हैं, यह पूंजीवादी व्यवस्था में होता है, और कम्युनिस्ट अर्थव्यवस्था में तो ऐसा तरीक़ा अपनाया गया कि धन प्राप्ति की कोशिश अपने अधिकार में नहीं रही और मेहनत करने वाले को काम की भावना से वंचित कर दिया गया, इस्लाम में दोनों कमियों से बचने की व्यवस्था है, लेहाज़ा इन दो पश्चिमी व्यवस्थाओं से हट कर जो सूरत इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार है उसको आधार बना कर हम को स्कीम सोचनी है।

अल्लाह तआला ने इस्लाम में विशेष रूप से ज़कात की बहुत अच्छी व्यवस्था भी रखी है, अगर उसका इस्तेमाल सही हो तो कोई परेशानी की बात नहीं हो सकती, अगर ज़कात की व्यवस्था भी काफी नहीं हुई होती तो अल्लाह तआला अलीम (बहुत जानने वाला)

व ख़बीर (हर चीज़ की पूरी पूरी ख़बर रखने वाला) है। इससे ज़ियादा का नियम निर्धारित करता, वह फ़रमाते ''और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में बढ़ोत्तरी हो, तो खुदा के नज़दीक उसमें बढ़ोत्तरी नहीं होती और जो तुम ज़कात देते हो और उससे खुदा की रज़ामंदी तलाश करते हो तो वह बरकत का कारण है और ऐसे ही लोग (अपने माल को) दो गुणा–तीन गुणा करने वाले हैं (सूरः अल–रूम–39) फिर सूद की जो बुराई बताई गई हैं, और उसको अल्लाह तआला से जंग करने की सूरत क़रार दी गई तो उसकी हैसियत साँप की है जिसको देख कर आदमी डर जाए और उससे भागे, न कि उसके क़रीब होने की कोशिश करे और उसके चिकने चिकने जिस्म पर हाथ फेरे।

इस्लाम एक व्यापक धर्म है, इसमें ज़िन्दगी के सारे ही पहलुओं को समेटा गया है, सिर्फ़ अक़ीदा (धारणा–विश्वास) और इबादत (उपासना) तक ही सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसमें उन पहलुओं का भी लेहाज़ किया गया है जो इन्सान की प्राकृतिक जायज़ ज़रूरतों से संबन्ध रखते हैं और उनका धन से अच्छा खासा सम्बन्ध है, लेहाज़ा इस की चिन्ता करना इस्लाम में सिर्फ़ जायज़ ही नहीं, बल्कि कुछ अवसरों पर ज़रूरी करार दी गई है, लेकिन इस्लाम की इस व्यापकता के साथ इसमें मुनासिब लेहाज़ रखने को बताया कि कौन चीज़ कितनी ज़ियादा ज़रूरी है और कौन सी चीज़ कम ज़रूरी है, इसको इस मिसाल से समझा जा सकता है कि एक बार हुज़ूर सल्ल0 जुमे का ख़ुत्बा दे रहे थे, बड़ा व्यवसायिक क़ाफ़िला आया और कारोबार से सम्बन्ध रखने वाले उसकी ओर जाने लगे इस पर अल्लाह की ओर से पकड़ आई कि अल्लाह की इबादत की ओर बुलाया जा रहा है उसको छोड़ कर तुरन्त आर्थिक लाभ की ओर ध्यान दिया जाने लगा, लेहाज़ा इस पर चेतावनी दी गई, लेकिन इसी के साथ साथ यह भी फ़रमा दिया गया कि तुम नमाज़ अदा कर लो और फिर जाओ और अपनी मौलिक आवश्यकताओं की तलाश में लगो, यह नहीं कहा गया कि हर हाल में सिर्फ़ एक ही पहलू में सीमित रहो। ''मोमिन'' जब जुमे के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो ख़ुदा की याद यानी नमाज़ के लिए जल्दी करो और (ख़रीद व फरोख़्त) छोड़ दो, और तुम ज्ञान व बुद्धि रखते हो तो तुम्हारे हक़ में यह बेहतर है, फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और ख़ुदा का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो।

(सूरः अल–जुमाः 10)

तो इसमें तरतीब बता दी गई किस का महत्व कितना है, लेहाज़ा हमको दोनों की चिन्ता करनी है, दूसरी मिसाल हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की है कि वो बड़े व्यवसायी व कारोबारी थे, जब वो खलीफ़ा हुए तो अपने

कारोबार के लिए चले, हज़रत उमर रज़ि0 ने टोका कि उम्मत के कानून व्यवस्था के काम कैसे होंगे? उन्होंने कहा कि अपनी रोज़ी रोटी की ज़रूरत का क्या करें? उन्होंने कहाः–

इस का सरकार से लीजिए, तो सरकारी व्यवस्था के महत्व की वजह से राज़ी हो गये, वो चाहते तो अपने स्तर के अनुसार पारिश्रमिक लेते, सुप्रिमों थे उसी के मुताबिक पारिश्रमिक ले सकते थे, लेकिन उन्होंने इतना पारिश्रमिक कुबूल किया जिसमें किसी हद तक ग़रीबी में ज़िन्दगी गुज़र सकती थी और इसमें आख़िर तक सख़्त रवय्या रखा, जिसका वाक़िया इतिहास में आता है।

लेहाज़ा मसला तरतीब का है, ज़रूरत हर पहलू की है, लेकिन इसमें पहले और दूसरे दर्जे का लेहाज़ रखना पड़ेगा, इसमें इस्लाम और पश्चिमी दृष्टिकोंण में अंतर्विरोध है, लेहाज़ा हमें इस्लामी दृष्टिकोण से देखना है, पश्चिम ने धन बढ़ाने को प्राथमिकता दी है और इसमें लालच व हिर्स को आधार बनाया है और इस्लाम ने प्राथमिकता ज़रूरत को दी है और इन्सानी हमदर्दी और सब की ख़ैर ख़्वाही को प्राथमिकता दी है, इसीलिए ज़कात की व्यवस्था की है, पश्चिमी व्यवस्था में सूदी बैंकों को असाधारण महत्व दिया गया है, जिसका ख़राब नतीजा तुरन्त तो नहीं निकलता, लेकिन बाद में उसका नुकसान सामने आता है जैसा कि आज कल अचानक दुन्या में इस समय घटना घट रही है।

लेहाज़ा हम को ऐसी राह तलाश करनी है जिसका अच्छा पहलू सामने हो और बुरे पहलू से हम बच सकें, दीनी मदरसों को असल महत्व दीनी होने की है, इसके लिए हम को उस नियम को हम को आदर्श बनाना है, जो हुज़ूर सल्ल0 के नमाज़े जुमा के बारे में हमारे सामने आदर्श के रूप में रखा गया है।

इस सिलसिले में इस्लामी नियम को आधार बना कर चिन्तन करना चाहिए कि इस्लामी अर्थव्यवस्था को नये हालात और नये तक़ाज़ों को सामने रखते हुए किस तरह सम्पादित की जाये, अर्थव्यवस्था जीवन की एक अहम ज़रूरत है, इसकी अपेक्षा नहीं कर सकते, लेकिन ग़ैरों की व्यवस्था के प्रभाव से अपने को बचाते हुए इस्लामी नियमानुसार हल ढूढ़ना चाहिए, इसके लिए हमारे मुस्लिम कालेज़ों और यूनिवर्सिटियों में रिसर्च की भी अच्छी व्यवस्था है, पश्चिमी आर्थिक नियम के कुचक्र में से निकलने के लिए शोध व चिंतन–मनन की व्यवस्था करनी चाहिए जो कि अब तक आमतौर पर नहीं है, जो कि अफसोस की बात है, दशकों से वही पश्चिमी चिन्तन शैली की व्याख्या की जा रही है, रहे हमारे दीनी मदरसे तो वहां भी अर्थ–शास्त्र का आवश्यकतानुसार परिचय और उसमें इस्लामी दृष्टिकोण की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, हमारे ''नदवा'' में तो पहले ही से अर्थशास्त्र बल्कि

राजनीति शास्त्र का परिचय विधवत रूप से पाठयक्रम में दाख़िल है, अतः मैंने अपनी छात्रावस्था में ''नदवा'' में अर्थशास्त्र उस किताब के माध्यम से पढ़ी है जो हैदराबाद की उस्मानिया युनिवर्सिटी के इण्टरमीडिएट के पाठ्यक्रम में दाखिल थी, वह हमारे यहां भी पाठ्यक्रम में दाखिल थी, फिर व्यक्तिगत अध्ययन से बी0ए0 की किताब भी पढ़ी थी।

अतः अर्थव्यवस्था के महत्व को समझता हूँ और उसकी समस्याओं व कवायद पर बेहतर से बेहतर तरीक़े पर ग़ौर करने का विरोधी नहीं हूँ, और उसकी चिता को ज़रूरी समझता हूँ, लेकिन इस्लामी नियम को नज़रअंदाज़ कर के नहीं, और न ही पश्चिमी नियम को नज़रअंदाज किये बिना नहीं जिसमें व्यवसाय व सूद को मिला दिया जाता है, लेहाज़ा अर्थशास्त्री इस्लाम की महब्बत में और कुर्आनी हुक्म को महत्व देने में कमी न करें।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

अभी दिख रहा है और कुछ आगे दिखेगा, जब मामूली मुसीबतों से कुछ न समझे तो बड़ी मुसीबतों का सिलसिला आरम्भ हुआ, जब कोई इस प्रकार की मुसीबत आती तो बेक़ाबू व बेचैन हो कर हज़रत मूसा से दुआ करवाते और बनी इस्राईल की आज़ादी का वादा करते फिर जैसे ही वह मुसीबत टल जाती वही हरकतें शुरु कर देते।

6. हज़रत सईद बिन जुबैर से रिवायत की गई है कि जब फिरऔन ने बात न मानी तो तूफान आया जिससे खेतियों की तबाही का खतरा पैदा हो गया तो घबरा कर मूसा के पास पहुँचे कि तुम अपने विशेष तरीके पर दुआ करके यह मुसीबत दूर कर दो हम बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेज देंगे, हज़रत मूसा की दुआ से तूफ़ान थम गया और खूब पैदावार हुई, फिरऔन वाले अपने वादे पर कायम न रहे तो अल्लाह ने खेतियों पर टिड्डी दल भेज दिया फिर घबरा कर मूसा के पास आए और सब वादे किये मगर फिर मुकर गए तो अल्लाह ने गल्ले में कीड़ा भेज दिया फिर दुआ कराई और फिर मुकर गए तो अल्लाह ने उनका खाना पीना दूभर कर दिया मेढ़क की अधिकता हुई और पीने वाला पानी खून बन गया सब कुछ हुआ लेकिन उनकी अकड़ न गई तो अंततः वे डुबो दिए गए और मिस्र फिर शाम की सत्ता बनी इस्राईल को अल्लाह के वादे के अनुसार प्राप्त हुई।

7. मतलब यह है कि अल्लाह तआला के ज्ञान और भाग्य में उनके लिए एक समय तो ऐसा आना ही था जब वे अज़ाब का शिकार हो कर नष्ट हों लेकिन इससे पहले दो छोटे अज़ाब जो आ रहे थे उनको एक समय के लिए हटा लिया जाता था।

8. एक शब्द से उनके गुण और कारीगरी की ओर इशारा है और दूसरे शब्द से उनके खेत और बाग़ों की ओर इशारा है विशेष रूप से अंगूर वगैरह के लिए वे बड़ी–बड़ी टट्टियाँ लगा कर उन पर बेलें चढ़ाया करते थे।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

नबी करीम सल्ल0 की सीरते पाक और इस्लामी इतिहास का

यूरोप के स्वभाव और रुचि के अनुकूल पेश करना समय का महत्वपूर्ण कर्तव्य

—मौलाना मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0

सहनशीलताः–

यह बात स्पष्ट है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नैतिकता के शिक्षक और मानवता के मार्गदर्शक हैं, अल्लाह तआला फरमाता है ''बेशक आप सल्ल0 अख़लाक़ के बलन्द मरतबे पर हैं'' हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद फरमाया मेरी तरबियत अल्लाह तआला ने फ़रमाई है और बेहतरीन फ़रमाई है'' हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तआला ने मुझे बलन्द अख़लाक़ और अच्छे आमाल को पूरा करने के लिए भेजा है'' जब हज़रत आइशा रज़ि0 से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़लाक़ के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया ''आप सल्ल0 अख़लाक़ में कुर्आन का पूर्ण नमूना थे'' क्षमा, सहनशीलता, हृदय की विशालता में आप सल्ल0 का जो मक़ाम था, वहां तक बड़े–बड़े बुद्धिमानों और कवियों की पहुँच नहीं थी, इस विषय में कुछ मिसालें पेश की जाती हैं, आप सल्ल0 की दिलदारी एहसान और विशालता का एक नमूना वह था जब मुनाफ़िक़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबै इब्ने सलूल को क़ब्र में उतारा गया तो आप सल्ल0 वहां तशरीफ़ लाये और हुक्म दिया कि उसको क़ब्र से निकाला जाये, उसके बाद आप सल्ल0 ने उसको अपने घुटनों पर रखा और अपना लुआबेदहन (थूक) उस पर डाला और अपनी क़मीस मुबारक उसको पहनाई।

(सही बुख़ारी)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ चल रहा था, आप सल्ल0 उस वक्त नजरान की चादर ज़ेबे तन किये हुए थे जिसके किनारे गोटे थे, रास्ते में एक आराबी आप सल्ल0 से मिला और आपकी चादर मुबारक पकड़ कर ज़ोर से खींची, मैंने नज़र उठाई तो देखा कि आपकी गरदन पर उसके खींचने की वजह से निशान पड़ गये हैं, फिर उस आराबी ने कहा ''या मुहम्मद अल्लाह का जो माल आप सल्ल0 के पास है वह मुझे देने का हुक्म दीजिए, आप सल्ल0 ने उसकी तरफ़ मुड़ कर देखा और हंसे फिर हिदायत की कि उसको दे दिया जाये।

(सही बुख़ारी)

ज़ैद बिन सअ़ना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कर्ज़ का मुतालबा किया जो आप सल्ल0 ने उससे लिया था, फिर उसके बाद उसने कपड़ा पकड़ कर आप सल्ल0 के शान–ए–मुबारक से ज़ोर से खींचा और अपनी मुटठी में कपड़े को ले लिया और सख़्त अलफ़ाज़ में बात की,

फिर कहा तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद बड़े टाल मटोल करने वाले हो हज़रत उमर रज़ि0 ने उसको झिड़का, और सख़्त लहजे में बात की, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 का रवय्या मुस्कुराहट का रहा, आप सल्ल0 ने हज़रत उमर रज़ि0 से फ़रमाया उमर हम और यह शख़्स तुम्हारी तरफ़ से दूसरे रवय्ये के मुस्तहिक़ थे, मुझे तुम क़र्ज जल्द अदा करने का मशवरा देते और उसको नर्म तरीक़े से तक़ाज़ा करने को कहते, फिर आप सल्ल0 ने फ़रमाया उसकी मुद्दत अदाइगी में अभी तीन दिन बाक़ी हैं, बहर हाल आप सल्ल0 ने हज़रत उमर रज़ि0 को उसके कर्ज़ की अदाइगी का हुक्म दिया और बीस साअ़ उसको ज़ियादा देने को फ़रमाया कि यह उसका मुआवजा है जो हज़रत उमर रज़ि0 ने उसको खौफ़ज़दा कर दिया था और फिर यही बातें उसके इस्लाम लाने का सबब बन गईं।

जानवरों के साथ नर्मीः–

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बे ज़बान जानवरों के साथ नर्मी का हुक्म फरमाते थे, शद्दाद बिन औस कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ अच्छा मुआमला करने और नर्म बरताव करने का हुक्म दिया है इसलिए अगर क़त्ल भी करो तो अच्छी तरह करो, ज़ब्ह करो तो अच्छी तरह करो, तुम में जो ज़ब्ह करना चाहे वह अपनी छुरी पहले तैयार करे और अपने ज़बीहे को आराम दे।

(सही मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 रावी हैं कि एक शख्स ने एक बकरी ज़मीन में ज़बह करने के लिए लिटाई उसके बाद छुरी तेज़ करना शुरु किया, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने यह देख कर फ़रमाया क्या तुम उसको दो बार मारना चाहते हो? इसको लिटाने से पहले तुम ने छुरी तेज़ क्यों न कर ली? (तबरानी)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 बयान करते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ एक सफ़र में थे आप सल्ल0 एक ज़रूरत के लिए वहां से थोड़ी देर के लिए तशरीफ़ ले गये, इस बीच हमने एक छोटी चिड़िया देखी, उसके साथ उसके दो बच्चे थे हमने दोनों बच्चे पकड़ लिये, वह यह देख कर अपने परों को फड़फड़ाने लगी, आप सल्ल0 तशरीफ़ लाये और पूछाः किस ने उसके बच्चे छीन कर उसको तकलीफ़ पहुँचाई है? फिर आप सल्ल0 ने हुक्म दिया कि उसके बच्चे वापस कर दो, यहां हमने चींटियों की एक आबादी देखी, और उसको जला दिया, आप सल्ल0 ने फ़रमाया आग से अज़ाब देने का हक़ सिर्फ आग के रब को है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाब–ए–किराम रज़ि0 को जानवरों को चारा पानी देने की हिदायत फ़रमाई और उसको परेशान न करने और उनकी ताक़त

से ज़ियादा बोझ लादने को मना किया, और उनको आराम पहुँचाने को अज्र स़वाब और अल्लाह से क़रीब होने का ज़रिया बताया और उसके फजायल बयान फ़रमाये। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि एक शख़्स कहीं के सफ़र पर था, रास्ते में उसको सख़्त प्यास लगी, सामने एक कुऐं पर नज़र पड़ी वह उसमें उतर गया जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास की शिद्दत की वजह से कीचड़ चाट रहा है, उसने अपने दिल में कहा कि प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था, वही उसका भी है, वह फिर कुऐं में उतरा, अपने चमड़े के मोज़े पानी से भरे, फिर उसको अपने दाँतों से दबाया और ऊपर आ कर कुत्ते को पिलाया, अल्लाह तआला ने उसके इस अमल को क़बूल फ़रमाया और उसकी मग़फिरत फ़रमा दी। लोगों ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! चौपाये और जानवरों के मुआमले में भी अज्र है? आप सल्ल0 ने फ़रमाया हर उस मख़लूक़ में जो तरोताज़ा जिगर रखती है अज्र है।

(सही बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने बयान फ़रमाया एक औरत को सिर्फ़ इस बात पर अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना पानी नहीं दिया, और न उसको छोड़ा कि वह कीड़े मकोड़ों ही से अपना पेट भर ले।

(इमाम नौवी बरिवायत मुस्लिम)

सुहैल बिन अम्र रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 का गुज़र एक ऐसे ऊँट पर हुआ जिसका पेट कमज़ोरी की वज़ह से उस की पीठ से लग गया था, आपने फ़रमाया इन बेज़बान जानवरों के मुआमले में अल्लाह से डरो, उन पर सवारी करो तो अच्छी तरह, उनको ज़बह करके उनका गोश्त इस्तेमाल करो तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत में हो।

(सुनने अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रावी हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम किसी सरसब्ज़ जगह पर जाओ तो ऊँटों को ज़मीन पर उनके हक़ से महरूम न करो, और अगर ख़ुश्क ज़मीन पर जाओ तो वहां तेज़ चलो, रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो, इसलिए कि वहां जानवरों की आमद व रफ़्त रहती है और कीड़े मकोड़े वहां पनाह लेते हैं।

(सही मुस्लिम)

मानव जाति में उत्तम अख़लाक़ का सबसे बड़ा प्रतीक और सूचक पैगम्बरों की ज़ात है, और पैगम्बरों में सबसे आला व अफ़ज़ल हस्ती रसूलुल्लाह सल्ल0 की है, इसी वजह से अल्लाह तआला ने आप को अख़लाक़ के उच्च कोटि की विशेषता से सुसज्जित किया, अल्लाह ने फ़रमाया ''तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये हैं जो तुम ही में से हैं, जिनको तुम्हारे नुक़सान की बात अप्रिय होती है जो तुम्हारे नफ़े के लिए बड़े

ख़्वाहिशमन्द रहते हैं और ईमान वालों के हक़ में बड़े प्रेमी और मेहरबान हैं''।

लेकिन यह अजीब अस्मंजस है कि यूरोपियन लेखक ख़ासतौर पर ओरेनटिलिस्ट Orientalist ने सीरते नबवी सल्ल0 के इस पहलू को बिलकुल नज़र अन्दाज़ कर दिया है और कुछ एतिहासिक और दण्डित कार्यवाइयों से यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि (नऊज़बिल्लाह) आप सल्ल0 हिंसा और बल प्रयोग करने के प्रचारक थे और इस्लाम हिंसा, जब्र की शिक्षा देता है, और ओरनटेलिस्ट ने आप की क्षमा, दया, करूणा की विशेषता को क्रूरता से बदल दिया।

आज पश्चिमी देशों में नबी करीम सल्ल0 के विषय में जो धारणा बनी है वह इन्हीं बद नियत ओरनटेलिस्ट के फैलाये हुए ग़लत प्रोपेगण्डे के नतीजे में है, मौजूदा ज़माने के रिसर्च और तहक़ीक़ के बावजूद उनका ज़ेहन नहीं बदला, और ज़हमत भी नहीं करते कि सीरते नबवी का साफ़ और खुले ज़ेहन से अध्ययन करें और वास्तविकता पता लगाएं, यूरोप के जिन बुद्धि जीवियों ने पक्षपात से रहित हो कर इस्लाम का अध्ययन किया वह इस्लामिक शिक्षा से प्रभावित हो कर इस्लाम के सच्चे सेवक और अज्ञाकारी बने, और स्वीकार किया कि पिछली जानकारी अज्ञानता पर आधारित थी। कुछ पाश्चात्य लेखकों और इतिहासकारों ने स्पष्ट किया कि हमारे लिखने का उद्देश्य मुसलमानों के दिलों से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 का सम्मान और प्रेम ख़त्म करना है, यूरोप के इन ख़तरनाक लेखकों में प्रथम लाइन में निम्नलिखित लेखक हैं:–

वेलयम मयूर, A.J. Arberry, A. Geom, Goldizher, Zweimer, G. Vom, Grunbaum, P.H. Hitti, A.J. Wensink, L.Mussingnon, D.S. Margoliuth,

ज़हरीले तत्व पर आधारित इन किताबों को इस्लाम से मौरूसी दुशमनी और सलीबी जंगों के असर से अवाम में लोक प्रियता प्राप्त हुई, इस घृणा जनक और पक्षपाती विचारों को इतिहास, क़िस्सा कहानी, नाविल द्वारा प्रचलित किया गया, इसी के अनुसार फ़िल्में बनाई गईं, इस्लाम जगत के समाजी, सियासी घटनाओं को इस्लाम की शिक्षा और ख़ुद नबी करीम की शखसियत से जोड़ने की कोशिश की गई, और पाठ्यक्रम में सम्मलित किया गया, सिर्फ़ यही नहीं बल्कि सीरते नबवी सल्ल0 पर काम करने वाले लेखकों ने और ख़ुद मुस्लिम सीरत निगारों और इतिहासकारों ने इन्हीं किताबों पर एतिमाद किया जिसकी वजह से यूरोप के साथ–साथ ख़ुद इस्लामी दुन्या में सीरते नबवी सल्ल0 के तअल्लुक़ से ग़लत हक़ाएक़ और मालूमात आम हो गईं और मुसलमान शिक्षित वर्ग इससे प्रभावित हुआ ओरेनटियलिश्ट ने यह किताबें ऐसे ज़माने में लिखीं जब कि पूरी दुन्या पर मुसलमानों को राजनैतिक प्रभुत्व प्राप्त था, दूसरी ओर

यूरोप जिहालत व गुमराही से निकल कर रोशनी की तरफ़ क़दम बढ़ा रहा था और मुस्लिम विजेताओं का रोब दबदबा उस पर छाया हुआ था, इसी के साथ–साथ यूरोप गृहयुद्ध से पीड़ित था। सौ साला, तीस साला, दस साला, तीन साला जंगें यूरोनियन ख़ानाजंगी, यूरोपीयन ख़नाजंगी गृहयुद्ध की खुली हुई मिसालें हैं, जिनमें लाखों लोगों का क़त्ले आम हुआ, और इन ख़ानाजंगियों की वजह से ज़िन्दगी से मायूसी आम हो गई और इसी के साथ साथ मुस्लिम विजेताओं की कामयाबी और इस्लामी सभ्यता और नागरिक विकास देख कर यूरोप आत्म हीनता का शिकार हो गया था। इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध ईर्षा, कपट, शत्रुता पैदा हो गई थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपमानजनक कार्टूनों का प्रकाशन और आप सल्ल0 की मुबारक सीरत को ग़लत तरीक़े से पेश किया जाना उस दुशमनी की साफ़ दलील है।

पश्चिमी देश स्वाभाविक रूप से कायर और कमज़ोर हैं और कायर हमेशा अपशब्द का प्रयोग करता है यूरोपियन इतिहास कार की किताबें इसका खुला सुबूत हैं, जब कि मुसलमानों का स्वाभिमान जवां मर्दी, बहादुरी, दयाशीलता, हृदय की उदारता है और वीर कमज़ोरों के साथ क्षमा, दिलदारी, के साथ पेश आता है।

यूरोपियन इतिहासकारों का एतराफ़ः–

ईसाई इतिहासकार फ़िलिप वाच और यूसुफ़ किरवाज़ लिखते हैं कि हज़रत मुआविया रज़ि0 के ज़माने में मिस्र में ईसाइयों की संख्या 2.5 लाख के क़रीब थी लेकिन आधी सदी के बाद अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद के ज़माने में उनकी आधी संख्या ने इस्लामी शिक्षा खास तौर पर इस्लामी न्याय व समानता, दिलदारी व रवादारी से प्रभावित हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया।

प्रसिद्ध ओरनटेलिस्ट ''सरटूमास आरनल्ड'' ने अपनी किताब ''दअ़वते इस्लामी'' में दलीलों के साथ लिखा है कि इस्लाम के शासन काल में ग़ैरमुस्लिमों के साथ न्याय, समानता, उदार हृदय का जो मुआमला किया गया यूरोप की पूरी तारीख़ में इसकी मिसाल नहीं मिलती।

जरमन की मशहूर ओरेनटेलिस्ट महिला ''हो कांजो'' अपनी किताब ''यूरोप में इस्लाम का उदय'' और ''दयावान विजेता'' में लिखती हैं कि मुसलमानों ने कभी भी इस्लाम क़बूल करने पर किसी को मजबूर नहीं किया, इसके विरुद्ध ईसाईयों ने नसरानियत क़बूल न करने पर क़त्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म किया, ख़ास तौर पर ''उनदुलुस'' में मुसलमानों पर ज़ुल्म व बरबरियत के पहाड़ तोड़े गये।

पाप यूहन्ना ने अपनी किताब ''तारीख़ मिस्र'' में लिखा है कि जब तक अम्र बिन आस मिस्र के गवर्नर रहे, कभी भी कलीसा से टेक्स नहीं लिया और न ही

शेष पृष्ठ .....26....पर

आपसी मतभेद और ख़ानदानी झगड़ों को ख़त्म कीजिए

—मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0 —प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

इस समय मुसलमानों में पतन व पिछड़ेपन की जो खुली हुई निशानियाँ और बेबरकती, फ़जीहत, बदनामी व जग हंसाई के जो राष्ट्रीय कारण पाये जाते हैं उनमें आपसी तनाव, खानदानी झगड़े, और इससे आगे बढ़ कर आपसी अनबन, दुशमनी, एक दूसरे की इज्ज़त के दरपै होना, उसको ख़ाक में मिलाने की कोशिश करना, और उसके नतीजे में मुक़दमा बाज़ी, माल व वक़्त की बरबादी और न ख़त्म होने वाली परेशानियाँ हैं। सैकड़ों बल्कि हज़ारों खानदान हैं, जिनमें ज़मीन जायदाद के सिलसिले में और कभी कुछ दुखद घटनाओं के नतीजे में आखरी दरजे की अनबन व तनाव देखने में आता है, ख़ानदान दो हिस्सों में बँट जाता है और मिलना जुलना, सलाम कलाम भी बन्द हो जाता है। बाज़ वक़्त सिर्फ ग़मी के मौक़े पर बरसों के बिछड़े हुए मिलते हैं बाज़ वक़्त इसकी भी तौफ़ीक़ नहीं होती, सालहा साल तक नस्ल दर नस्ल इसका सिलसिला जारी रहता है और दिल दिमाग़ की बेहतरीन सलाहियतें और तवानाइयाँ दूसरों को नीचा दिखाने और उनके घर की ईंट से ईंट बजवा देने में ख़र्च होती हैं, किसी भाई की बेइज़्ज़ती और नाकामी पर ऐसी खुशी मनाई जाती है जैसे कभी किसी क़िले की फ़तहयाबी या किसी सलतनत के पा लेने पर खुशी मनाई जाती थी, जो लोग इस पसती से कुछ बलन्द हैं और इतने गये गुज़रे नहीं और उनको कुछ दीनी तालीम, नेक संगत हासिल है और वह अच्छे दीनदार नज़र आते हैं वह भी सिलारहमी के अर्थ से अपरचित और उसकी खूबियों से बेख़बर हैं क़ुरआन हदीस में उसका जो दर्जा है उससे बिलकुल ग़ाफ़िल, (अनभिज्ञ) और बहुमूल्य हीरे और उस पवित्र सुन्नत से वंचित हैं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निहायत महबूब थी, और उस सुन्नत का रंग हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुक़द्दस सीरत में बहुत नुमायाँ और रोशन है, बुज़ुर्गों की दोस्ती का निबाह पुराने तअल्लुक़ात की पासदारी, वालिदैन के दोस्तों के साथ सुलूक, छोटों के साथ उलफ़त और बड़ों का अदब तो बहुत दूर की बातें हैं ज़ाबते का तअल्लुक़ (नियामानुसार सम्बन्ध) और क़ानूनी कर्तव्य भी अदा नहीं होते, इसका नतीजा है कि ख़ानदान और महल्ले और फिर घर जन्नत के बजाये जहन्नम का नमूना अम्न व सलामती के बजाये झगड़े के घर बने हुए हैं।

ज़िन्दगी का लुत्फ और सामूहिक ज़िन्दगी बल्कि इस्लामी ज़िन्दगी की भी कोई बरकत नज़र नहीं आती, फिर

उसके नतीजे में ग़ैबी तौर पर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से दी गई खबरों और वादों के मुताबिक़ जो सज़ाएं मिल रही हैं, और जो बरकतें छिनती चली जा रही हैं उनको समझने के लिए न शरीअ़त न कुर्आन व हदीस का ज़रूरी इल्म है, न मिज़ाजों में इन्साफ़, न वक़्त में गुनजाइश, जबकि कुर्आन व हदीस में खोल खोल कर नाइत्तिफ़ाक़ी, खानदानी झगड़े, कीना कपट और बदले की भावना व कार्यवाही के व्यक्तिगत व सामूहिक परिणाम बयान कर दिये गये हैं। और उसके मुक़ाबले में रिश्ता निभाने, झगड़ों को सुलझाने की कोशिश, माफ़ी तलाफ़ी, त्याग व बलिदान, हक़ पर होते हुए भी दब जाने और रिश्ता तोड़ने वालों के साथ रिश्ता जोड़ने तकलीफ़ पहुंचाने वालों को राहत पहुंचाने की फ़जीलत और सवाब यह सब स्पष्ट रूप से बयान किया गया है।

इस ज़माने में दीन के बहुत से क्षेत्रों में बहुत काम हुआ है। इबादात, अमल के सवाब पर एक पुस्तकालय का पुस्तकालय तैयार हो गया है, फ़िक़्ही मस्अलों और शरई हुक्मों पर भी बड़ी बड़ी किताबें तैयार हो गई हैं, और कुछ समय से राजनीति व समाज शास्त्र पर भी बड़ा ध्यान दिया गया है, और उसके एक एक पहलू को रौशन व स्पष्ट किया गया है। इन कोशिशों के असरात मुसलमानों की ज़िन्दगी में नज़र आते हैं और उन्होंने दीन के इन छेत्रों में कुछ तरक़्क़ी की है, लेकिन जहां तक मेरी मालूमात व अध्ययन का सम्बन्ध है, आपसी सम्बन्ध बनाये रखने, रिश्ता निभाने और झगड़े सुलझाने के विषय पर बहुत कम काम हुआ है और ख़ास तौर पर आसान भाषा और सुगम शैली में दिनचर्या के अध्ययन और घटनाओं की रोशनी में बहुत कम लेख व पत्रिकायें और किताबें लिखी गई हैं। जब कि आपस के गतिरोध व तोड़, ख़ानदानी झगड़े, बन्धुत्व की समाप्ति और आपसी झगड़े की बीमारी वह महामारी है जिससे मुशकिल से कोई शहर, क़स्बा, छोटे से छोटा गाँव और हद यह है कि मुश्किल से कोई महल्ला और ख़ानदान सुरक्षित रहा होगा, इससे मुसलमानों का सामूहिक जीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है न दीनी कोशिश पूरी तरह लाभदायक हो रही है और न राजनैतिक एकता व संगठन की कोशिश सार्थक हो रही है।

इन कमियों को दूर करने की पूरी कोशिश की जाये और इस पर पूरा ध्यान दिया जाये इसके बिना ज़िन्दगी की चूल सही तौर पर नहीं बैठती और इबादत और अल्लाह के साथ तअल्लुक़ मज़बूत नहीं होता, यह बीमारी जितनी हानिकारक और संगीन है उसका तक़ाज़ा यह है कि इन बुराइयों को ख़त्म करने के लिए सख़्त क़दम उठाया जाये।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः सज्द—ए—सह्व किसे कहते हैं?

उत्तरः सह्व के माने भूल जाने के हैं भूले से कभी कभी नमाज़ में कमी ज़ियादती हो कर नुक़्सान आ जाता है, बाज़े नुक़्सान ऐसे हैं कि उन को दूर करने के लिए नमाज़ के आख़िरी कादा में दो सज्दे किए जाते हैं उन को सजद—ए—सह्व कहते हैं।

प्रश्नः सज्द—ए—सह्व किस तरह किया जाता है?

उत्तरः कादा अख़ीरा में तशह्हुद पढ़ने के बाद एक तरफ़ सलाम फेर कर तकबीर कहे और सज्दा करे सज्दा में तीन बार तस्बीह पढ़े फिर तकबीर कहता हुआ सर उठाए और सीधा बैठ कर फिर तकबीर कहता हुआ दूसरा सज्दा करे, फिर तकबीर कहता हुआ सर उठाए और बैठ कर फिर दो बारा अत्तहीयात और दुरूद शरीफ और दुआ पढ़ कर दोनों तफ़र सलाम फेरे।

प्रश्नः अगर सज्द—ए—सह्व के सलाम से पहले अत्तहीयात के बाद दुरूद और दुआ भी पढ़ लें तो कैसा है?

उत्तरः बाज उलमा ने उसे एहतियातन पसंद किया है कि सज्द—ए—सह्व से पहले भी तशह्हुद और दुरूद और दुआ पढ़े, और सज्द—ए—सह्व के बाद भी तीनों चीज़ें पढ़ें इसलिए पढ़ लेना बेहतर है लेकिन न पढ़ने में भी नुक़्सान नहीं।

प्रश्नः सजद—ए—सह्व सिर्फ फर्ज़ नमाज़ों में वाजिब है या तमाम नमाज़ों में?

उत्तरः तमाम नमाज़ों में सज्द—ए—सह्व का हुक्म यकसाँ है!

प्रश्नः अगर एक तरफ़ भी सलाम न फेरा और सजद—ए—सह्व कर लिया तो क्या हुक्म है?

उत्तरः नमाज़ हो जायेगी मगर कसदन ऐसा करना मकरूह तनज़ीही है।

प्रश्नः अगर दोनों सलामों के बाद सज्द—ए—सह्व किया तो क्या हुक्म है?

उत्तरः एक रिवायत के मुवाफिक़ जाइज़ है, मगर क़वी बात यह है कि एक ही तरफ़ सलाम फेरे अगर दोनों तरफ़ सलाम फेर दिया तो सजद—ए—सह्व न करे बल्कि नमाज़ को दुहरा ले।

प्रश्नः सज्द—ए—सह्व किन चीज़ों से वाजिब होता है?

उत्तरः (1) किसी वाजिब के छूट जाने से । (2) या वाजिब में ताखीर हो जाने से। (3) या किसी फर्ज में ताखीर हो जाने से (4) या किसी फर्ज को आगे कर देने से (5) या किसी फर्ज़ को पीछे कर देने से मसलन दो रुकू कर लिया या किसी वाजिब की कैफियत बदल देने से सज्द—ए—सह्व वाजिब होता है।

प्रश्नः यह बातें जिन को भूल कर करने से सज्द—ए—सह्व वाजिब होता है अगर क़सदन की जाएं तो क्या हुक्म है?

उत्तरः कसदन करने से सज्द—ए—सह्व से नुक्सान दूर नहीं होता बल्कि नमाज़ को

लौटाना वाजिब होता है।

प्रश्न: अगर एक नमाज़ में कई बातें ऐसी हो जाएं जिनमें से हर एक पर सज्द–ए–सह्व वाजिब होता है तो कितने सज्दे करे?

उत्तर: सिर्फ एक मर्तबा दो सज्द–ए–सह्व कर लेना काफी है।

प्रश्न: अगर भूले से तादीले अर्कान न करे तो सज्द–ए–सह्व वाजिब होगा या नहीं?

उत्तर: सज्द–ए–सह्व वाजिब होगा।

प्रश्न: अगर क़ादा ऊला भूल जाए तो क्या हुक्म है?

उत्तर: अगर भूल से उठने लगे तो जब तक बैठने के क़रीब हो बैठ जाए और सज्द–ए–सह्व न करे और अगर खड़े होने के क़रीब हो जाए तो क़ादा को छोड़ दे और खड़ा हो जाए, आख़िर में सज्द–ए–सह्व कर लें, नमाज़ हो जायेगी।

प्रश्न: और किन किन बातों से सज्द–ए–सह्व वाजिब होता है?

उत्तर: (1) रुकू मुकर्रर यानी दोबारा कर लेने से (2) तीन सज्दे कर लेने से (3) कादा ऊला या कादा अख़ीरा में तशह्हुद छूट जाने से (4) कादा ऊला में तशह्हुद के बाद दुरूद बक़दरे अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन पढ़ने से या इतनी देर खामोश बैठे रहने से (5) जहरी (जिसमें इमाम आवाज़ से पढ़ता है) नमज़ों में इमाम के आहिस्ता पढ़ने से (6) सिर्री नमाज़ों में इमाम के जहर करने से सज्द–ए–सह्व वाजिब होता है बशर्ते कि यह तमाम बातें भूले से हुई हों।

❖❖❖

नबी करीम सल्ल0 .....

किसी अनुचित काम को उन्होंने किया, बल्कि जब तक वह मिस्र के गवर्नर रहे, कलीसाओं की हिफ़ाज़त की, एक दूसरा पोप भी ख़ाइलसिरयानी कहता है कि बैज़िन्तीनी बादशाहों ने हमारे मुकद्दस कलीसाओं और गिरजा घरों को इनतिहाई बेदर्दी, सफ़्फ़ाक़ी और ज़ुल्म दहशतगर्दी से लूट लिया लेकिन जब मुसलमानों का शासन काल आया तो मुसलमान शासकों ने हम को रूमियों के ज़ुल्म से नजात दिलाई और हमको पूरी आज़ादी दी कि हम ईसाई जिस तरह चाहें अपने मज़हब पर अमल करें, मुसलमानों के शासनकाल में हम को अम्न व सुकून नसीब हुआ।

''तारीख़ मिस्र फ़िल असरिल बैज़िन्तीनी'' डॉ0 संवरी अबुल ख़ैर सलीम पेज नं0 62 दारे ऐन क़ाहिरह 2001 ई0

''तारीख़ुल उम्मतिल क़िबतियाद'' के लेखक याक़ूब नख़ला रफ़ीला कहते हैं कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 के ज़माने में किबतियों को जो अम्न सुकून और राहत व चैन नसीब हुआ वह उनको किसी ज़माने में नसीब नहीं हुआ।

यूरोप ने मुसलमानों के शासनकाल में आमने सामने जंग करने के बजाय मक्र फ़रेब, अय्यारी व मक्कारी, चालबाज़ी मिथ्या, झूठ का रास्ता एख़्तियार किया और मुसलमानों के विरुद्ध चिंतनीय और सांस्कृतिक जंग छेड़ दी।

❖❖❖

बख़्शिश की दुआ

—सम्पादक

या रब मैं गुनहगार मुझे बख़्श दीजिए
तौबा हज़ार बार मुझे बख़्श दीजिए
सारी खताएं आँखों में मेरी हैं या ग़फ़ूर
दिल से हूँ शर्मसार मुझे बख़्श दीजिए
माबूद फ़क़त तू है ईमान है मेरा
लेकिन हूँ ख़ताकार मुझे बख़्श दीजिए
ईमान नबी पर है उन पर मेरे सलाम
या रब हों सद हज़ार मुझे बख़्श दीजिए
ख़ुलफ़ाए राशदीन से रखता हूँ महब्बत
सुन्नी हूँ आशकार मुझे बख़्श दीजिए
अबनाए नबी और बनातुन नबी सभी
मेरे हैं वह सरदार मुझे बख़्श दीजिए
अज़्वाजे नबी माएं हैं मेरी वह सब के सब
मैं उन का ख़िदमतगार मुझे बख़्श दीजिए
असहाबे नबी से हुआ राज़ी तू ऐ ख़ुदा
मैं उन का ताबेदार मुझे बख़्श दीजिए
या रब नबीये पाक पर लाख़ों सलाम हों
मैं उन का जांनिसार मुझे बख़्श दीजिए
असहाबे नबी पर भी या रब मेरे सलाम
मैं उन का ज़ेर बार मुझे बख़्श दीजिए
अज़्वाज़ और औलादे नबी पर भी हों सलाम
मैं उन का नमक ख़ार मुझे बख़्श दीजिए
आ़सी है बेक़रार कि इस में है बेशुमार
या रब तू है ग़फ़्फ़ार उसे बख़्श दीजिए

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

शादी का मुनासिब तरीक़ाः–

मुनासिब रिश्ता आ जाने के बाद शादी में देर नहीं लगानी चाहिए, हदीस में इसकी बहुत ताकीद आयी है, शरीयत ने ये मसला बहुत आसान बनाया था और खैरुल कुरून में आमतौर पर इसी स्तर की शादियां हुआ करती थीं, जिस में ना दहेज की ज़रुरत ना बारातियों का हुजूम, ना जोड़े और घोड़े की ज़रुरत, बल्कि अक्सर अवसर पर तो शादी हो जाने के बाद लोगों को ख़बर मिलती थी कि फुलां साहब की शादी हो गई, यहाँ तक कि नबी–ए–अकरम (स०) को ख़बर देने और आप से निकाह पढ़वा कर बरकत हासिल करने का भी पता नहीं चलता, हालांकि आप (स०) की अज़मत (महानता) जितनी सहाब–ए–किराम के दिलों में थी उसको बयान नहीं किया जा सकता, लेकिन इसे बद नसीबी और दुर्भाग्य के अलावा क्या नाम दिया जाए कि उसी शरीयत के मानने वालों ने दूसरों की नक़ल में अपने आप को ऐसी रस्मों और ऐसे रिवाजों की ज़ंजीरों में जकड़ लिया और पाबंद कर लिया कि शादी ''एक मसला'' बन गयी, कि इसका नाम आते ही (शादी, यानी ख़ुशी) के बजाय अभिभावकों ख़ासतौर पर लड़की के अभिभावकों को चिंता व परेशानी और जिम्मेदारी का पहाड़ सर पर रखा हुआ महसूस होने लगता है, हालांकि लड़कियों या उनके अभिभावकों पर कोई भी ख़र्च शरीयत ने शादी के वक़्त अनिवार्य नहीं किया था, रसूलुल्लाह (स०) की ज़िन्दगी से (जो हर लेहाज़ से मुकम्मल और आदर्श क़रार दी गयी है) इस बारे में भी मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए, सभी जानकार इस बात को जानते हैं कि आप (स०) ने अपने और अपनी लड़कियों के अनेक निकाह किये, सबसे चहेती और लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) का निकाह भी किया और जिस अंदाज़ से किया उसका पूरा विवरण मालूम किया जा सकता है, काश इस्लाम का नाम लेने वाले, रसूलुल्लाह (स०) से महब्बत का दम भरने वाले इस दावे की लाज रखते और महबूब के नक्श–ए–क़दम पर चल कर आख़िरत ही नहीं दुन्या भी ख़ुशगवार बना लेते!

यहां थोड़ा विवरण बस हज़रत फ़ातिमा का पेश किया जाता है।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) की शादीः–

हज़रत फ़ातिमा का पैग़ाम पहले हज़रत अबू बक्र व उमर (रजि०) की तरफ़ से आया आप (स०) ने कम उम्री की वजह से मना कर दिया, हज़रत अली (रजि०) ने ख़ुद हाज़िर हो कर शरमाते और झिझकते हुए अपना पैग़ाम दिया जिसे अल्लाह तआला की इज़ाज़त से कुबूल कर लिया गया, बस ज़ुबानी तौर

कुछ तय हो गया, ना लोग इकठ्ठा हुए और ना कोई इंतिज़ाम हुआ, उस वक़्त हज़रत अली की उम्र 21 साल और हज़रत फ़ातिमा की 15 साल थी (इस से मालूम हुआ कि दोनों की उम्र में बहुत ज़ियादा फर्क़ नहीं होना चाहिए और ये भी मालूम हुआ कि शादी के लिए मुनासिब उम्रें यही हैं)।

हुज़ूर (स०) ने अपने ख़ास ख़ादिम हज़रत अनस (रज़ि०) को हुक्म दिया कि जाओ अबूबक्र व उमर, उस्मान, तल्हा, ज़ुबैर, और अंसारी सहाबा (रज़ि०) की एक जमात को बुला लाओ, सब लोग हाज़िर हो गए, आप (स०) ने एक छोटा सा ख़ुत्बा दे कर निकाह कर दिया, और छोहारे बंटवादिए।(मवाहिबुल लदुन्निया, मअ शरह लिज़्ज़रक़ानी पृष्ठ 5–6, जिल्द 2)

फिर हुज़ूर (स०) ने उम्मे ऐमन (रज़ि०) के साथ हज़रत फ़ातिमा (रज़ि0) को हज़रत अली के घर भेज दिया और कुछ घरेलू इस्तेमाल का सामन भी जिसमें दो चादरें, ओढ़ने बिछाने का थोड़ा सामान साथ में भेज दिया, दो बाजूबंद, एक कमली, एक तकया, एक प्याला, एक चक्की, एक मशकीज़ा, एक घड़ा और कुछ हदीसों में एक पलंग का ज़िक्र भी मिलता है, यह था कुल दहेज सर्वर–ए–कायनात की चहेती बेटी का, और इस सामान का देना भी ज़रुरत की वजह से था ना कि किसी रिवाज की वजह से, क्योंकि हज़रत अली (रज़ि०) के पास कुछ था ही नहीं, और वह अब तक हुज़ूर (स०) की सरपरस्ती में रहे थे, आप के अलावा कोई और ऐसा नहीं था जो इस क़िस्म की ज़रूरतें पूरी करने में मदद करता, उन्होंने ख़ुद फ़रमा दिया था, कि "मेरे पास कुछ नहीं है"। (मुसनद अहमद, जिल्द 1,पृष्ठः80)

दहेज के बारे में शरई हुक्मों के विवरणः–

जब यहाँ हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के दहेज (शादी के समय दिए जाने वाले सामान) का ज़िक्र आ गया है तो मुनासिब मालूम होता है कि इससे पैदा होने वाली ग़लतफहमी यानी मौजूदा ज़माने में रिवाज पायी हुई फ़ुज़ूलख़र्ची वाले दहेज के बारे में दलील देने की हक़ीक़त स्पष्ट कर दी जाये और आजकल प्रचलित दहेज का शरीयत का हुक्म भी बता दिया जाये। इस बारे में यह कहना मुनासिब होगा कि अब से 50–60 साल पहले मामला तक़रीबन उल्टा था यानी लड़की के बजाये लड़के (और उसके अभिभावकों) से पैसा उसूल किया जाता था, उस समय के उलमा ने इसके ख़िलाफ़ फ़तवे दिये उनमें से कुछ लिखे जा रहे हैंः दारुल उलूम के पूर्व आला मुफ़्ती हज़रत मौलाना मुफ़्ती अजीज़ुर्रहमान साहब (रह०) के मुद्रित फ़तवा संकलन से कुछ फ़तवों के संक्षिप्त हवाले पेश किये जा रहे हैं, हज़रत मुफ़्ती साहब से सवाल किया गया :–

सवालः– न० 838, 1240, मंगेतर के अभिभावकों को लड़के से महर के अलावा और कुछ लेना और महर ले कर उसमें मालिकाना इस्तेमाल करना और दावत वगैरह करना जायज़ है या नहीं? इसका जवाब मुफ़्ती साहब ने निम्नलिखित दिया है।

जवाबः— मंगेतर के अभिभावकों को महर के पैसों से कुछ ले कर उसका दुरुपयोग करना सही नहीं और महर के अलावा दूसरे माल वगैरह, पति वगैरह से लेना फिक्ह के माहिर लोगों ने इसको रिश्वत कहा है। (फतावा दारुल उलूम जिल्द 2,3, पृष्ठ 205)

इसके अलावा हज़रत मुफ़्ती साहब के फ़तवों का जो अलग संकलन मौलाना ज़फ़ीरुद्दीन साहब की तरतीब और फुटनोट के साथ ख़ुद दारुल उलूम देवबंद के प्रिंसिपल ऑफ़िस की तरफ़ से छप रहा है, उसमें भी इस क़िस्म के अनेक फ़तवे मौजूद हैं (मिसाल के लिए देखिये फ़तावा दारुल उलूम मुदल्लल, मुहश्शा जिल्द 7, पृष्ठ 247, पृष्ठ 503, पृष्ठ 505), हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह० के फ़तावा संकलन में भी एक फतवे से यही ज़ाहिर होता है। (इम्दादुल फ़तावा, जिल्द 2, पृष्ठ 257—58)

हजरत मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद शफ़ी साहब (रह०) पूर्व मुफ़्ति—ए—आज़म पकिस्तान, सदर मुफ़्ती दारुल उलूम देवबंद के मुद्रित फ़तवा संकलन (इम्दादुल मुफ़्तीन) में भी मुफ़्ती साहब के अनेकों फ़तवे इसी आशय के मौजूद हैं, जैसे एक फ़तवा यह है :— ''औरत के परिजन और सगे सम्बन्धी जो कुछ राशि अपने लिए ले कर निकाह करते हैं, यह रिश्वत है ..... पैसा लेना और देना जायज़ नहीं, और अगर देदी है तो पति को हक़ है कि निकाह के बाद वापस ले ले। (जैसा कि अल्लामा शामी (रह०) ने अपनी किताब के अध्याय ''महर'' में जिक्र किया है) उस के बाद मुफ्ती साहब ने ''बहरूरराइक'' की शामी के हवाले से वह फिक्ही रिवायत लिखी है, जिस का ज़िक्र ऊपर हवाले के साथ आ चूका है) सारांश यह कि जिस ज़माने में जिस क़िस्म की ख़िलाफे शरीयत रस्मो रिवाज़ का चलन हुआ उलमा —ए—उम्मत ने तत्काल रूप से रोक थाम की कोशिश की और शरीयत के हुक्म को सबके सामने बयान कर के हुज्जत तमाम कर दी, लेकिन इधर कुछ समय से उल्लेखित रस्म के बिलकुल विपरीत यानी बजाए पति से पैसे की मांग के शादी के वक़्त लड़की (या उसके अभिभावकों) से पैसे वगैरह की मांग की जाती है जो कभी कभी इतना ज़ियादा होता है कि ... गरीबों का तो ज़िक्र ही क्या मध्यम वर्गीय लोगों के लिए भी उसका पूरा करना आसान नहीं होता, कुछ इलाकों में तो यह रस्म..... महामारी की तरह..... फैल रही है, जिसके नतीजे में ऐसी भयानक समस्याएं खड़ी हो रही हैं कि उनका विवरण जान कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और मानवता शर्मसार हो जाती है, इसका एक महसूस और खुला नुकसान तो यह सामने आ रहा है कि लड़कियां बिना शादी के बूढ़ी और अधेड़ उम्र की हो रही हैं, क्योंकि पति को ''खरीदने'' के लिए उनके या उनके अभिभावकों के पास पैसे नहीं होते, इसके अलावा प्राकृतिक इच्छाएं सही तरीक़े पर पूरे ना होने की वजह से जो ख़राबियां फैलतीं या फैल सकती है उसका अंदाजा कर लेना किसी समझदार के लिए मुश्किल नहीं, जैसे दुष्कर्म आम होना, वैश्यावृत्ति बढ़ना, बल्कि कभी कभी इस्लाम से फिर जाने तक की

नौबत आ जाती है। (अल्लाह की पनाह) यह रस्म निश्चित रूप से मानव स्वभाव के लेहाज़ से भी उलटी है और शरीयत के क़ानून के मिज़ाज के एतेबार से भी, क्योंकि अल्लाह ने ''औरत'' को उसकी लैंगिक विशिष्टताओं के लेहाज से मतलूब (अपेक्षित) बनाया है और मर्द को तालिब (तलाश करने वाला) (जैसा कि शाह वलियुल्लाह (रह०) ने भी अपनी किताब ''हुज्जतुल्लाहिल बालिगह'' में इशारा किया है) यही वजह है कि निक़ाह के वक़्त मर्द पर महर ज़रूरी है औरत पर नहीं (बल्कि वह तो महर पाने की हक़दार करार दी गयी है) इसलिए यह बुरी रस्म कम से कम मुसलमानों में कुछ समय पहले तक आम नहीं थी (कुछ सीमित इलाकों और बिरादरियों को छोड़ कर) बल्कि इसके उल्टा लड़के से पैसे लेने का रिवाज था, जिसका एक अहम सबूत उपरोक्त फ़तवे व फ़िक़्ह की किताबों के हवाले हैं। और लगभग 50 साल और उससे ज़ियादा उम्र के लोग इस बात को भूले ना होंगे कि लड़के की शादी हिन्दुस्तान के अक्सर इलाकों में एक मसला होती थी, लड़की की नहीं, इसलिए उपरोक्त फ़तवों में लड़की या उसके अभिभावकों से पैसों की मांग करने की बाबत कोई फ़तवा मुश्किल से ही मिलता है, बताने की कोई ज़रुरत नहीं कि उलमा के फतवे ज़माने के रुझान व रफ़्तार का सच्चा आईना होते हैं। लेकिन अब हिन्दुस्तान के मुसलमान खासतौर से हैदराबाद, बिहार, उ०प्र० वग़ैरह के लोग इस रस्म बल्कि ''महामारी'' में इस तरह गिरफ़्तार हैं कि इससे निज़ात और छुटकारे की कोई राह नज़र नहीं आ रही है, और इसकी वजह से भयानक कठिनाईयों के शिकार और ख़तरनाक शंकाओं से परेशान हैं, इसलिए उलमा और समाज सुधारकों की ज़िम्मेदारी बनती है कि वे अपनी ओर से इस बुरी रस्म को उखाड़ फेंकने की पूरी कोशिश करें, यह रस्म मानव प्रवृत्ति के भी ख़िलाफ़ है और शरई नियम से भी बहुत ना पसंदीदा और मक़रूह है, इसकी शरई हैसियत जानने के लिए तो वही फ़िक़्ह की किताबों की इबारतें और फ़तवे काफ़ी हैं जो ऊपर उल्लेख हुए, क्यों कि असल मसला यहां भी वही है जो वहां है, इस फ़र्क़ के साथ कि वहां दूल्हा से पैसे मांगे जाते थे जिसके किसी हद तक जायज़ होने की भी गुंजाईश नज़र आती थी और शायद इसीलिए जिस स्पष्टता व ताकीद से यह मसला बयान किया है उतने बलपूर्वक उसके विपरीत हालत का नहीं किया कि जिस का हम आज कल सामना कर रहे हैं, लड़की (या उसके अभिभावकों से) पैसे की मांग, क्योंकि इसका भी हुक्म उन्हीं इबारतों और फ़तवों से निकाला जा सकता है, यानी जब लड़के से माँगना ह़राम है तो लड़की से तो और भी ज़ियादा हराम होगा, ऐसी मांग की बुन्याद पर मिलने वाले पैसे शरीयत की नज़र में ''रिश्वत'' होगा, जिसका लेना देना और उसके लिए माध्यम बनना सब हराम है और हदीस के मुताबिक़ ऐसे लोगों पर अल्लाह की लानत होती है, (कश्फुल ख़िफा 2048),

शेष पृष्ठ .....35....पर

अनोखे फूल और पत्ते

—माइल ख़ैराबादी

हमारे घर के पीछे एक खण्डर है। यह खण्डर पहले ख़ाँ साहब का था। अब्बा जान ने उसे ख़रीद लिया। खण्डर इतना लम्बा चौड़ा है कि उसमें दो बड़े बड़े मकान बन सकते हैं। जब यह खण्डर ख़ाँ साहब के पास था तो उसकी ज़मीन आसपास के घरों से नीची थी। वर्षा का पानी इसमें भर जाता था। पानी भर जाने से पास के घरों को हानि होती थी। हमारा घर कच्चा बना है। सबसे अधिक हमारे घर के पीछे की दीवार को हानि पहुंचती थी। अब्बा जान हर साल पुश्ता बांध देते लेकिन वर्षा में पुश्ता बराबर हो जाता। एक बार दीवार गिर भी गई। अब्बा जान और दूसरे घरों के लोग ख़ाँ साहब से कहते कि भाई खण्डर से एक गहरी नाली खोद दो और उसे सड़क वाले नाले से मिला दो। अगर आप यह कृपा करें तो पानी खण्डर में न रुके और हमारी दीवारों को हानि न हो। ख़ाँ साहब ये सुनते लेकिन कोई परवाह न करते। आख़िर अब्बा जान ने उनसे कहा कि भाई यह ज़मीन बेच डालो। ख़ाँ साहब इस पर राज़ी हो गये और अब्बा जान ने वह खण्डर खरीद लिया। खण्डर खरीद कर एक लम्बी और गहरी नाली सड़क तक खुदवा दी। अब खण्डर में पानी नहीं रुकता। हमारे घर की दीवार भी अब नहीं गिरती और दूसरे मकानों की दीवारें भी वर्षा के पानी से बची रहती हैं। खण्डर के आस पास के लोग हर साल वर्षा में अब्बा जान को बड़ी दुआएं देते हैं।

खण्डर हमारे कब्ज़े में आया तो हमारे खेल के लिए बहुत सी जगह निकल आई। हमारे भाई जान तो होमवर्क करने के लिए घर में जगह नहीं थी। वे मस्जिद में जा कर उस सारे काम को करते थे जो स्कूल में दिया जाता था। अब भाई जान ने खण्डर के बीचों बीच दस फीट वर्ग अर्थात दस फीट लम्बा और दस ही फीट चौड़ा एक चबूतरा बनाया। चबूतरे के कोने पर सात सात फीट लम्बी मोटी लकड़ियां गाड़ दीं। इन लकड़ियों पर बांस बिछा कर कीलें जड़ दीं, फिर खुद ही खपरेल ला कर बिछा ली। इसके बाद अपनी मेज़ और कुर्सी उस खपरेल में ले गये और अब इस शान से होमवर्क करते हैं कि खाने पीने की सुध भी नहीं रहती। जब हम बुलाने जाते हैं तब भाई वहां से उठते हैं। भाई जान उस खपरेल वाले चबूतरे को अपना बंगला कहते हैं।

भाई जान ने तो यह किया। हमने भाई जान के बंगले के आस पास अपने दौड़ने के लिए रास्ते बनाये। इन रास्तों के आस पास फूलों वाले पौधे लगाये। भाई जान ने भी मदद दी। भाई जान ने मदद इसलिए दी कि उनका बंगला इस चमन के बीच में आ जायेगा। इस साल बरसात आई तो सचमुच वही खण्डर जो ख़ाँ साहब के ज़माने में सड़े हुए पानी, गन्दगी, तरह तरह के कीड़ों मकोड़ों और मच्छरों

का घर था, अच्छा भला चमन बन गया। अब उसमें गुलाब, चमेली, जूही, रात की रानी, अमरूद, पपीते, आड़ू और इसी तरह के फूलों और फ़लों का चमन नज़र आता है। हम सब भी ख़ुश, पास पड़ोस के लोग भी ख़ुश। और भाई खुश क्यों न हों। रात को जब इस चमन के फूलों की सुगन्ध फैलती है तो आस पास के घर महक जाते हैं। पहले इन घरों में तरह तरह की बीमारियां घुसी रहती थीं। अब वातावरण साफ और सुगन्धित हो जाने से बीमारियों का नाम तक नहीं। जब भाई जान कभी कभी हमें बुला कर बैठाते हैं, पास पड़ोस के बच्चों को बुलाते हैं और कहानियां सुनाते हैं। कहानियां सुनने के शौक़ में हम भाई जान के छोटे मोटे काम कर देते हैं। चमन और बंगले की सफ़ाई करते हैं, भाई जान के लिए पीने का पानी ला कर रख देते हैं।

भाई जान ग्यारहवां दर्जा पास करके कलकत्ता चले गये। वे कलकत्ता गये तो हमें एक लाभ और एक हानि हुई। लाभ यह हुआ कि अब उनका बंगला हमारे कब्ज़े में आ गया, हानि यह हुई कि अब हमें कहानियां सुनाने वाला कोई न रहा। हमने इस हानि को इस तरह पूरा किया कि आपस में मिल बैठते और वही कहानियां दोहराते जो भाई जान से सुन चुके थे। इस तरह हमने कई महीने काटे। ईद की छुट्टियों में भाई जान घर आये तो हमारे चमन में बोने के लिए तरह तरह के नये बीज और पौधे लाये और उनको बो दिया। एक दिन कहने लगे कि पास पड़ोस के बच्चों को इकट्ठा करो तो फूलों, फलों और पत्तों के सम्बन्ध में ऐसी ऐसी बातें बताऊँ कि तुम सब दंग रह जाओ और यह सोचने लगो कि अल्लाह ने कैसी कैसी चीज़ें दुन्या में पैदा की हैं।

यह सुन कर हम सब सोचने लगे कि भाई ''दंग'' किस तरह रह जाते हैं। हमने साथियों को बुलवा दिया। मग़रिब के बाद सब एकत्रित हो गये। भाई जान बैठे और फिर इस तरह बातें शुरु हुईं।

सबसे पहले भाई जान ने एक प्रश्न किया। पूछा, ''यह बताओ कि बड़े से बड़ा कौन सा पत्ता तुमने देखा है?'' हमारे लिए इसका जवाब बहुत सरल था। हमने झट से बता दिया कि सबसे बड़ा पत्ता केले का होता है।

''और उसकी लम्बाई चौड़ाई कितनी होती है?'' भाई जान ने दूसरा प्रश्न किया।

''लम्बाई? लम्बाई तो भाई जान इतनी होती है कि अगर यहां खड़ा करें तो आपके बंगले की छत से लग जाये।'' मैंने यह कहा तो सब भाई जान के बंगले (और भाई, खपरेल वाले चबूतरे) को नीचे से ऊपर तक देखने लगे। बात बिल्कुल ठीक थी। भाई जान ने बताया कि मेरे इस बंगले की ऊँचाई तेरह फीट है। ''अच्छा और चौड़ाई?''

शौकत ने जवाब दिया, ''चौड़ाई तो बस यही फीट डेढ़ फीट होती है।''

''ठीक है'' कहते हुए भाई जान ने अपनी एलबम निकाली और एक लम्बे पत्तों का चित्र दिखाया फिर कहने लगे, ''यह देखो, यह भी एक पत्ते का चित्र है, यह पत्ता पैंसठ फीट तक लम्बा होता है।''

''पैंसठ फीट?'' हम सब दांतों तले अंगुली दबा कर रह गये। या अल्लाह! पैंसठ फीट लम्बा पत्ता।'' हमीद भाई तेरह का पहाड़ा पढ़ने लगे ''तेरह इक्कम तेरह..... तेरह पंचे पैंसठ, ओफ़ फ़ोह। भाई जान! आपके बंगले से पांच गुना ऊँचा।''

''और भाई जान! सुनिये तो'', सईद मियाँ कहने लगे और नीम के वृक्ष पर एक नज़र डाल कर बोले, ''हाँ यह नीम पैंसठ फीट से कुछ ही कम या ज़ियादा होगा, है भी तो बड़ा पुराना नीम।''

''तो इतना बड़ा पत्ता होता है? जिस अल्लाह ने चींटी पैदा की है, उसी ने हाथी बनाया, तो फिर अल्लाह जो चीज़ जितनी बड़ी चाहता है, बना देता है। नीम की पत्ती इतनी सी, केले का पत्ता इतना बड़ा और जिस पत्ते का चित्र दिखा रहा हूँ वह पैंसठ फीट लम्बा।''

''हाँ ठीक है'' सफ़्फ़ो बाजी कहने लगीं, ''अल्लाह तो सब कुछ कर सकता है। अच्छा यह बताइये भाई जान! इस पत्ते का नाम क्या है और यह कहाँ होता है?

सफ़्फ़ो बाजी ने यह पूछा तो हम सबने भाई जान की ओर कान लगा दिये। भाई जान ने बताया–

''जिस वृक्ष का यह पत्ता है वह अमेरिका में अमेज़न नदी के किनारे पाया जाता है, और एक टापू है 'मेस्कारियन' वहां भी इसका वृक्ष होता है। अमेरिका वालों ने इस वृक्ष के पत्ते का नाम 'बम्बू पाम'– और मेस्कारियन वालों ने 'रुफ़िया पामे रखा है।''

ये नाम सुने तो सफ़्फ़ो आपा बोल पड़ीं, ''अगर हमारे देश में यह वृक्ष लगाया जाये तो इसका नाम 'लम्बू पाम' रखा जायेगा।''

''ही ही ही ही ही'' हम सब एक साथ हंसने लगे। भाई जान भी हंसे। इसके बाद कहा कि सफ़्फ़ो कहती तो ठीक है।

''यह क्या है भाई जान?'' हम सबने एक साथ पूछा।

भाई जान ने बताया कि ''यह भी एक पत्ता है। यह दक्षिणी अमेरिका की नदियों में पाया जाता है। इसका वृक्ष नहीं होता, जैसे हमारे यहां कुम्भी और कोकाबेली की बेलें होती हैं। नदियों में इस पत्ते की बेलें होती हैं। जैसे हमारे यहां कुम्भी पूरे के पूरे तालाब पर छा जाती है, इसी तरह इस पत्ते की बेलें भी मीलों तक फैलती चली जाती हैं और इसके पत्ते पानी पर तैरते रहते हैं, ज़रा देखो इसे ग़ौर से।''

भाई जान ने पत्ते की तसवीर दिखाते हुए कहा कि इसकी चौड़ाई कम से कम चार फीट और ज़ियादा से ज़ियादा बारह फीट होती है। चित्र में यह जो किनारों पर मोटा मोटा देखते हो, यह इस पत्ते की कगरें हैं।''

''तो क्या यह पत्ता थाली जैसा होता है? सफ़्फ़ो बाजी ने पूछा।

''बिल्कुल ठीक कहा तुमने! थाली की तरह तो यह होता ही है। इस पत्ते की कगर पाँच अंगुल तक ऊँची होती है, पत्ते का रंग ऊपर गहरा हरा और नीचे लाल होता है। कगरों का रंग सुर्ख होता है जो बड़ा सुन्दर लगता है।''

''अच्छा ज़रा ध्यान से देखो। ये जो नसें दिखाई दे रही हैं ना! ये सब ठीक बीचों बीच से निकली हैं, तुम

सब देखते हो ना! तो बीच में डन्ठल होता है। इसी डन्ठल से ये सारी नसें निकली हैं। ये नसें पत्ते को मज़बूत रखती हैं, देखो तो अल्लाह की कुदरत।''

''बेशक, बेशक।''

''और यही नसें पत्ते को ऊपर उठाये रखती हैं। इन नसों से पतली पतली शाखायें फूटती हैं। यह जो चित्र में एक जाल सा दिखाई देता है यह इन्हीं शाखाओं का है। डन्ठल और नसें खोखली होती हैं और इनमें हवा भरी होती हैं।''

''अरे वाह!''

''हवा भरी होने के कारण यह पत्ता पानी पर तैरता है।''

''आहा! क्या ख़ुदा की कुदरत है।''

''और तो सुनो, पत्तों के नीचे बहुत से छोटे–छोटे काँटे होते हैं। इन काँटों के कारण इस पत्ते को मछलियाँ नहीं खा सकतीं।''

''कहो, क्या ख़ूब है ख़ुदा की कुदरत।''

''अजब उसकी कुदरत अजब उसकी शान।''

❖❖❖

घरेलू मसाइल .....

इसलिए इसका वापस करना शरीयत के अनुसार ज़रूरी है जैसा कि ''कनिय्या'' नामी किताब के हवाले से अल्लामा शामी ने लिखा है।

(रद्दुल मुहतार : जिल्द 4, पृष्ठ 304)

फिक्ह की विश्वसनीय किताब ''कनिय्या'' में है कि रिश्वत का वापस करना ज़रूरी है (क्योंकि) लेने वाला मालिक नहीं बनता। (जिल्द 2 पृष्ठ 329) रिश्वत के मायने ''मजमउल बिहार'' में है:– चालबाजी से काम निकालने के लिए (माल को) ज़रिया बनाना (जिल्द 2, पृष्ठ 329) कैश की तरह सामान का डिमांड भी इसी हुक्म में आता है यानी ''दहेज'' मांगने में भी शरीयत में यही हुक्म है, सार यह है कि लड़के (या अभिभावकों) की ओर से लड़की (या उसके अभिभावकों) से इस तरह की जो भी निकाह के समय(या निकाह से पहले) मांग होगी, वह शरीयत की निगाह में गलत और ना जायज होगी।

❖❖❖

एक गीत

सोने रूपे के ये धारे
डूबे इनके लोभी सारे
बचकर रहना तुम हे प्यारे
दुन्या माया जाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
ईश-प्रेम से मन को भर लें
माता-पिता की सेवा कर लें
पीड़ित जनता के दुख हर लें
हो जायें ख़ुशहाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
सत्य धर्म यदि जनता पाये
देश शक्तिशाली बन जाये
जनता का दुख सब कट जाये
आये फिर न अकाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
ईश्वर की हम अनुमति पाएं
सेवक बन कर राज चलाएं
नित्य देश को स्वर्ग बनाएं
हो कर माला माल
हे प्यारे दुन्या माया जाल

❖❖❖

इल्म का बहुमूल्य ख़ज़ाना,

ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी, पटना

—इदारा

ख़ुदा बख़्श साहब ने अपने पिता से विरासत में मिली 1400 पुस्तकों के साथ अपनी इकट्ठा की गयीं चार हज़ार पुस्तकों को मिला कर सन् 1880 ई0 में एक निजी पुस्तकालय बनाया। उसी का विकसित रूप ''ख़ुदा बख़्श लाब्रेरी'' है। पटना में गंगा के कनारे स्थित इस लाइब्रेरी में प्राचीन और मध्य कालीन भारत के इतिहास से सम्बन्धित अनेकों ऐसी दुर्लभ कृतियां हैं जो अपने अन्दर इतिहास का जीवंत साक्ष्य समेटे हुए हैं। यहां कुछ ऐसी किताबें हैं जो विश्व में और कहीं देखने को नहीं मिलेंगी और अब वे ऐतिहासिक धरोहर हैं। यहां समूचे विश्व से कई दुर्लभ किताबें जुटाई गई हैं। किसी ने इस लाइब्रेरी के बारे में ठीक लिखा है— ''इसके अन्दर गुज़रे विद्धानों और गुज़रे बादशाहों की यादें सुरक्षित हैं इसके भीतर अज्ञात बातों का संस्मरण सुरक्षित है तथा एक ऐसी संस्कृति भी, जो अब यद्यपि मर रही है या बड़ी हद तक मर चुकी है, लेकिन उसी संस्कृति ने संसार पर गहरा प्रभाव डाला था। यहां इस्लामी साहित्य का अति उत्तम संग्रह है, कई मशहूर किताबों की पांडुलिपियाँ हैं। कई किताबों पर विभिन्न विद्धानों और राजाओं की ज्ञान वर्धक सम्पत्तियां और हस्ताक्षर भी मिलते हैं, वर्तमान में इस लाइब्रेरी में अंग्रेज़ी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, फ्रेंच, जर्मन, हिन्दी, पंजाबी, रशियन और जापानी भाषाओं की क़रीब ढाई लाख छपी हुई किताबें हैं अरबी, फ़ारसी, तुर्की, उर्दू तथा संस्कृत और हिन्दी की क़रीब इक्कीस हज़ार पांडुलिपियां हैं। यहां मुग़ल, सेन्ट्रल एशिया, राजपूत और तुर्की स्कूल के क़रीब तीन सौ से अधिक एलबम मिनिएचर पेंटिग्स हैं। लाइब्रेरी के दो रीडिंग रूम हैं, जिनमें एक शोधकर्ताओं और विद्वानों के लिए तथा दूसरा कैजुअल रीडर्स के लिए, यहां कुल क़रीब तीन हज़ार पाठक सदस्य हैं।

दिसम्बर 1969 ई0 में संसद द्वारा पारित ख़ुदा बख़्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी एक्ट के तहत इस लाइब्रेरी का प्रबन्धन एंव संचालन पूर्ण रूप से भारत सरकार के संस्कृति विभाग के अधीन है, इस की देख—रेख के लिए बारह सदस्य वाली समिति है जिसका पदेन अध्यक्ष राज्य के राज्यपाल हैं। इस लाब्रेरी के संस्थापक ख़ुदा बख़्श के पिता का नाम मुहम्मद बख़्श था जिन की इच्छा का परिणाम यह लाइब्रेरी है, इनका परिवार विद्धानों और न्यायधीशों का घराना था, इस परिवार के एक सदस्य ने ''फ़तावा आलमगीरी'' लिखने में भाग लिया था,

मुहम्मद बख़्श साहब ख़ुद विद्वान और शायर थे। मरते समय मुहम्मद बख़्श ने अनुरोध किया कि उनकी किताबें हर हाल में संजो कर रखी जाएं और हो सके तो पटना में एक लाइब्रेरी बनायी जाये जो पूर्वी ज्ञान के प्रचार– प्रसार का केन्द्र बने, वह 1876 में चल बसे।

ख़ुदा बख़्श का जन्म 2 अगस्त 1842 को उत्तरी बिहार में छपरा ज़िले के ओखी नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने किताबों से महब्बत का शौक़ अपने पिता से विरासत में पाया था जो आगे चल कर और विकसित हुआ, उन्होंने पढ़ाई पूरी कर पेशकार के पेशे से जीवन वृत्ति शुरु की, बाद में वह हैदराबाद में निज़ाम के सुप्रिम कोर्ट के जज नियुक्त हुए और अन्ततः 1898 में एक वकील के रूप में पटना वापस हुए। उनकी आर्थिक स्थिति कभी अच्छी नहीं रही, वह जितना कमाते थे उसका अधिकांश दुर्लभ कृतियों की ख़रीद पर व्यय कर देते थे। वह लाइब्रेरी स्थापना की अपने पिता की अन्तिम इच्छा हर हाल में पूरा करना चाहते थे।

ख़ुदा बख़्श साहब के जीवन काल में इस लाइब्रेरी में तीन वायसरायों एलगिन (1895), कर्ज़न (1903), तथा मिंटो (1906) का दौरा हुआ, लार्डकरज़न के नाम पर यहां एक रीडिंग रूम भी है जिसकी स्थापना 1905 में हुई थी।

इस लाईब्रेरी में कुछ ऐसी पांडुलिपियाँ हैं जो काग़ज़ के अलावा हिरण–छाल, ताड़ पत्र, कपड़े और दूसरी धातुओं पर लिखी गयी हैं। यहां संस्कृत की चालीस ऐसी किताबें हैं जो ताड़ पत्रों पर और मिथिलाक्षरी में लिखी गई हैं, संस्कृत के तीन अत्यन्त पुराने और दुर्लभ ग्रंथ हैं, जिनमें एक पाँचवी सदी में लिखा गया। उपनिषद भी हैं। अज्ञात लेखक द्वारा लिखी ''सीरत–ए–फ़ीरोज़शाही'' की एक दुर्लभ पांडुलिपि है। इसके बारे में बताया जाता है कि दुन्या में इसकी दूसरी प्रति मौजूद नहीं है। इस लाइब्रेरी की सूची 36 खण्डों में बनी है।

यहाँ हिन्दुस्तान के मुग़ल बादशाह के परिवार से सम्बन्धित इतिहास ''तारीख़ –ए–ख़ानदाने तैमूरिया'' की एक उत्कृष्ट प्रति है। कलाकृति के दृष्टिकोण से यह पुस्तक अमूल्य है। इसमें कम से कम 133 पृष्ठों पर चित्र बने हैं। यह चित्र अकबर के ज़माने के कुछ प्रसिद्ध चित्रकारों द्वारा बनाये गये हैं। हर चित्र के नीचे उसके चित्रकार का नाम भी अंकित है। एक जगह फ़ारसी में लिखा है। इस किबात का मूल्य आठ हज़ार रूपये है। आज हज़ारों पौण्ड में भी इस को ख़रीदना संभव नहीं है। बहुमूल्य चित्रों से सजी ''बादशाहनामा'' की एक प्रति है, जिसमें शाहजहाँ के काल का इतिहास दर्ज है।

शेष पृष्ठ .....39....पर

शराब, भंग, हीरोइन इत्यादि के सेवन की मनाही

—ई0 जावेद इक़बाल

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने कहा कि हर नशा लाने वाली चीज़ शराब है और हराम है। जो कोई दुन्या के जीवन में शराब पियेगा और इस हाल में मरेगा कि शराब का आदी (निरन्तर पीने वाला) होगा और उसने तौबा न की होगी तो आख़िरत (परलोक) में अल्लाह जन्नत की पाक शराब से उसे वंचित रखेगा।

(सही—मुस्लिम)

2. एक अन्य हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सावधान किया है कि मेरे रब (पालनहार) ने यह क़सम खाई है कि मेरी इज़्ज़त व जलाल (प्रतिष्ठा व प्रताप) की क़सम मेरे बन्दों में से जो बन्दा शराब का एक घूँट भी पियेगा तो आखिरत में उसको उतना ही रक्त और पीप अवश्य पिलाऊँगा। और जो बन्दा मेरे डर से शराब को छोड़ देगा तो मैं परलोक के पाक हौज़ों की पवित्र शराब उसे अवश्य पिलाऊँगा।

(मुस्नद अहमद)

3. एक अन्य हदीस में है कि हज़रत तारिक़ बिन सुवैद रज़ि0 ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से यह कह कर शराब पीने की इजाज़त मांगी कि मैं इस को दवा के रूप में पीता हूँ। आप सल्ल0 ने यह कह कर शराब पीने से मना किया कि वह दवा नहीं है, वह तो स्वयं बीमारी है।

(सही—मुस्लिम)

4. अबू मूसा अशअरी ने कुछ अन्य नशा लाने वाली चीज़ों के बारे में पूछा तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया ''मैं हर उस चीज़ से तुम्हें रोकता हूँ जो नशा लाने वाली हो और आदमी को नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दे।

(नमाज़ को भुला दे)

व्याख्याः–

इस्लाम शराब और जुए को बड़ी सख़्ती से रोकता है। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूर्वकालीन दिनों में (जिसे अज्ञान काल कहा जाता है) अरब समाज में शराब और जुए को बहुत लोकप्रियता प्राप्त थी। वे लोग भांति भांति की शराबें बनाते थे और गर्व के साथ उन्हें पीते पिलाते थे। कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने धीरे—धीरे लोगों को शराब और जुए से घृणा दिलाई। आरम्भ में बताया गया कि शराब में बड़ी खराबियां हैं, इससे होने वाली हानियाँ, इसके लाभ से बहुत अधिक हैं। फिर कुछ दिन बाद कहा गया कि नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ो। और जब उन लोगों के मन ख़ुदा और रसूल के आदेशों को स्वीकार करने के पूर्ण योग्य हो गये तो पूर्णतः शराब को छोड़ने का कठोर आदेश कुरआन में आ गया— ''ऐ ईमान वालो शराब और जुआ, बुत और पांसे यह सब नापाक काम शैतान के कामों में से हैं, शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे आपस में दुश्मनी डाल दे और ख़ुदा की याद से और नमाज़ से

रोक दे अतः तुम्हें इन कामों से दूर रहना चाहिए..''।
(कुर्आन 5:90–91)

अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अपने अनेक उपदेशों में और लोगों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में शराब न पीने की सख़्ती से मनाही की। आरम्भ में तो उन बर्तनों के प्रयोग पर भी रोक लगा दी थी जिन में शराब रखी जाती थी।

यह हक़ीक़त है कोई इस का इनकार नहीं कर सकता कि शराब में फ़ायदे बहुत कम हैं और इसके नुक़सान बहुत हैं। लाखों घर और परिवार शराब और जुए के कारण बर्बाद होते हम सब देख रहे हैं और उस पर रोक लगाने के सारे उपाय वर्तमान में असफल हो रहे हैं।

यहां पर दर्ज हदीस नं0 4 से यह भी स्पष्ट हो गया कि शराब के अतिरिक्त अन्य सभी चीज़ें जिन से नशा होता है जैसे भंग, हीरोइन इत्यादि इस्लामी शरीयत (धर्म विधान) में पूर्णतः वर्जित हैं।

❖❖❖

इल्म का बहुमूल्य .....

सोलहवीं शताब्दी के अन्त में कुस्तुनतुनिया में सुल्तान मुहम्मद तृतीय के लिए लिखित और उसे ही समर्पित हुसैनी द्वारा रचित ''शहंशाह नामा'' की दुर्लभ प्रति है, इस लाईब्रेरी में फ़िरदौसी द्वारा रची गयी ''शाहनामा'' की यह प्रति है, जो दस हज़ार अशआर के बाद अधूरी है। इसे प्रसिद्ध अमीर अली मरदान खाँ ने सम्राट शाह जहाँ को उपहार स्वरूप पेश किया था। इसे अति सुन्दर ईराक़ी शीर्षकों के साथ सोने से लिखे गये हैं। सन् 1911 ई0 में दिल्ली दरबार के अवसर पर यह पुस्तक सम्राट जार्ज पंजुम के सामने प्रस्तुत की गई थी। इस पर जार्ज के हस्ताक्षर हैं।

''यहाँ बादशाह नामा'' की एक और प्रति है, इसके पन्ने के चारों ओर चीनी चित्र कला में चौड़े किनारे बनाये गये हैं। इन किनारों में केकड़े, नाग चिड़ियाँ, भेड़िये और अनेकों प्रकार के फूल बने हैं, आरम्भिक पृष्ठ या शीर्षक ज़ैतूनी रंग के सोने से लिखा गया है और प्राचीन चर्म कवर पर सोने का काम किया हुआ है।

ईरान के प्रसिद्ध क्लासिकल शायर और सूफ़ी संत मौलाना 'अब्दुर्रहमान जामी' की किताबों की कई सूक्ष्म प्रतियाँ, यहाँ मौजूद हैं।

''दीवाने हाफ़िज़'' की ऐसी प्रति उपलब्ध है जिसमें जगह–जगह हुमायूं और जहांगीर ने अपने हाथ से टिप्पड़ियाँ लिखी हैं, इस किताब की कई और प्रतियाँ भी हैं। यहां ''तुज़्क–ए–जहांगीरी'' की उन प्रथम चार प्रतियों में से एक प्रति उपलब्ध है जिन्हें खुद शहंशाह ने अपने समकालीन सुल्तानों के पास तोहफ़े में भेजा था। यहाँ ''दीवाने कामरान'' गुलबदन बेगम द्वारा रचित हुमायूँ नामा, दाराशिकोह द्वारा लिखी सूफ़ी संतों की जीवनी ''सफीनतुल औलिया'' भी उपलब्ध है।

(ग्रहीत दैनिक हिन्दुस्तान, लखनऊ)

❖❖❖

राष्ट्रीय गीत

चीन को चेतावनी

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

आज हिमालय की चोटी से दुश्मन ने ललकारा है।
उठो जवानो उठो जवानो दुश्मन ने ललकारा है।।

चीन ज़रा तू होश में आये, भारत से टकराये मत।
हिन्द से क़ब्जा अब तू हटा ले कोह हिमालय हमारा है।।

काश्मीर उत्तर की सीमा, दक्षिण में है सागर हिन्द।
भारत में हैं मन्दिर मस्जिद, सिक्खों का गुरुद्वारा है।।

पूरब मे बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में पंजाब प्रदेश।
यह भारत का मानचित्र है, नक़्शा प्यारा, प्यारा है।।

हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, हम सब भाई भाई हैं।
हम भारत के प्रहरी हैं, और भारत वर्ष हमारा है।।

देश प्रेम का पाठ है सीखा, देश पे जान विछावार है।
पाक के छक्के जिसने छुड़ाये, वीर हमीद हमारा है।।

चन्द्र शेखर, आज़ाद भगत सिंह, अशफ़ाक़ उल्ला बलिदानी।
सबक दे गये हम लोगों को, हिन्दोस्तान हमारा है।।

जंग में पहेल नहीं करते हम, यह भारत का है सन्देश।
छेड़ दिया गर चीन ने हमको, चीन पे क़ब्ज़ा हमारा है।।

सिद्दीक़ी रचना का रचयिता, भारत का सच्चा प्रेमी है।
न्याय से रहना, हक पे लड़ना, यह ईमान हमारा है।।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये –इदारा

नीचे लिखी उर्दू के अशआर पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

जून नवम्बर जानिए
अप्रैल सितम्बर तीस
फरवरी 28 दिन की
बाक़ी सब इकत्तीस
मुनक़्सिम सन् चार पर
जिस साल होता है
साले क़बीस नाम का
उस साल होता है
फरवरी उन्तीस की उस साल होती है
अक़्ल यह इन्सान की क्या खूब होती है

جون، نومبر، جانئے
اپریل، ستمبر تیس
فروری اٹھائیس دن کی
باقی سب اکتیس
منقسم سن چار پر
جس سال ہوتا ہے
سال قبیسہ نام کا
اس سال ہوتا ہے
فروری انتیس کی اس سال ہوتی ہے
عقل یہ انسان کی، کیا خوب ہوتی ہے